आर.एन.आई. पंजीयन क्र.
CHHHIN/2017/72506

रायपुर से प्रकाशित हिंदी मासिक पत्रिका

किलोल

वर्ष 6 अंक 5, मई 2022

http://www.kilol.co.in

स्कूली शिक्षा में समर्थन हेतु समर्पित संस्था
WINGS2FLY
SOCIETY
COME LETS FLY

म.नं. 580/1, गली न. 17 बी,
दुर्गा चौक, आदर्श नगर, मोवा, रायपुर
ईमेल: wings2flysociety@gmail.com

मूल्य
खुदरा – 80/-
वार्षिक - 720/-
आजीवन - 10000/-

संपादक - डॉ. रचना अजमेरा

सह-संपादक

डॉ. एम सुधीश, डॉ. सुधीर श्रीवास्तव, प्रीति सिंह, ताराचंद जायसवाल, बलदाऊ राम साहू, नीलेश वर्मा, धारा यादव, डॉ. शिप्रा बेग, रीता मंडल, पुर्णेश डडसेना, वाणी मसीह, राज्यश्री साहू

ई-पत्रिका, ले आउट, आवरण पृष्ठ

कुन्दन लाल साहू

अपनी बात

प्रिय मित्रों,

किलोल पत्रिका लगातार 6 वर्षों से प्रकाशित हो रही है और इस समय में आप सबकी प्रिय बन चुकी है. यह मेरा सौभाग्य है कि इस पत्रिका के माध्यम से मैं आपके साथ जुड़ सका. पिछले कुछ माह से मैं यह महसूस कर रहा हूं कि आपनी अन्य जिम्मेदारियों के निर्वहन के चलते मैं पत्रिका को उतना समय नहीं दे पा रहा हूं जितना आवश्यक है. मुझे यह कहते हुये बहुत खुशी है कि पत्रिका की जिम्मेदारी अन्य साथियों ने बड़ी अच्छी तरह से उठा ली है. भारी मन से मैं अब आपसे विदा लेता हूं. अबसे पत्रिका का संपादन रचना जी के कुशल नेतृत्व में होगा. मुझे विश्वास है कि वे मुझसे बेहतर यह कार्य करेंगी. किलोल के साथ मेरा प्रेम सदैव बना रहेगा और मुझे विश्वास है कि आप सब भी अपना प्रेम इसी प्रकार बनाये रखेंगे.

आपका
डॉ. आलोक शुक्ला

संस्थापक- डॉ. आलोक शुक्ला

मुद्रक कीरत पाल सलूजा तथा प्रकाशक श्यामा तिवारी द्वारा
विंग्स टू फ्लाई सोसाइटी म. न. 580/1 गली न. 17बी, दुर्गा चौक, आदर्श नगर, मोवा, रायपुर, छ. ग. के पक्ष में.
सलूजा ग्राफिक्स 108-109, दुबे कॉलोनी, विधान सभा रोड़, मोवा जिला रायपुर, छत्तीसगढ़ से मुद्रित तथा विंग्स टू फ्लाई सोसाइटी, म.न.580/1 गली. न. 17 बी, दुर्गा चौक, आदर्श नगर, मोवा, रायपुर से प्रकाशित, संपादक डॉ. रचना अजमेरा.

अनुक्रमणिका

रस रसिक 6

बचपन की होली 8

नारी के रूप रंग 10

पंचतंत्र की कथाएँ 12

सप्ताह के दिन 14

परीक्षा 16

अमर शहीद भगतसिंह 18

अधूरी कहानी पूरी करो 20

चार भाइयों की कहानी 20

संतोष कुमार कौशिक द्वारा पूरी की गई कहानी 20

हरनारायण चन्द्रा द्वारा पूरी की गई कहानी 23

अगले अंक के लिए अधूरी कहानी 25

जल बचाओ 26

पिता 28

प्रतिष्ठा बनाए रखें 30

मतलब की दुनिया 32

लोकोक्तियों में औषधियां 34

कौन सी होली? 35

सादा जीवन उच्च विचार 37

कबाड़िया 40

बाघ 42

तारे 43

आँख 45

एक लेखक की कलम 46

हमारे प्रेरणास्रोत.....48
राष्ट्रीय जलीय जीव डाल्फिन.....50
युगारब्ध.....52
पलाश के फूल.....54
निर्णय क्षमता.....56
बादल.....59
आत्मज्ञान.....60
हुआ विवाह.....62
होली के रंग.....64
तपन.....65
एक राजा की कहानी.....66
परीक्षा.....67
गर्मी.....69
बंदर मामा.....71
आम.....72
घाम पियास के दिन आगे.....73
कैसे दूँ बधाई.....75
प्रेम का अतिरेक.....77
शिक्षा है वरदान.....79
नंदन वन में चुनाव.....81
बिटिया.....83
आग और पानी.....85
ब्रम्हगुप्त.....87
बाल पहेलियाँ.....89
गर्मी दीदी.....91
दुम.....92

गाँव 93
आम 95
ऊंट जी 96
परिवार 97
नया दोस्त 99
गिलहरी 102
नारी 103
100 दिवसीय पठन एवं गणितीय कौशल विकास अभियान 105
अष्टभुजी देवी 107
अँगना म शिक्षा 109
सूरज दादा 111
मास्टर जी का सबक 113
देखो ग्रीष्म ऋतु आई है 115
सूरज-दादा ,सूरज-दादा 117
रानी परी 119
उठ स्त्री तुझे जागना होगा। 121
चूहे जी 124
ऐसी राह चलो झटपट 127
आकाश 128
सूरज दादा-सूरज दादा 130
रविवार छुट्टी की शुरवात 132
जयति मां दुर्गा भवानी 133
आइसक्रीम वाला 135
गौरैया 137
सिख 139
आगे बढ़ता जा शिखर चढ़ता जा 140

मोंगरा के फूल 142
अपराधी 144
पापा जी मेले से आए 146
प्यारी दादी 147
उड़ जा रे परिन्दा 148
वर्धमान 150
पहली कमाई 152
फास्ट फूड ना- ना- ना 153
भारत भ्रमण कराना पापा 156
चित्र देख कर कहानी लिखो 158
संतोष कुमार कौशिक द्वारा भेजी गई कहानी 158
लिटिल पेंटर 158
हरनारायण चन्द्रा द्वारा भेजी गई कहानी 159
शौचालय 159
आस्था तंबोली कक्षा तीसरी द्वारा भेजी गई कहानी 160
अगले अंक की कहानी हेतु चित्र 161
भाखा जनऊला 162

रस रसिक

रचनाकार- अशोक कुमार यादव

गन्ने की रस लेकर,आया रस वाला,
घर के आंगन से निकली एक बाला,
रुको रसवाला, रस का क्या है भाव,
शुद्ध तो है, इसमें पानी तो नहीं डाला.

अभी लाया हूं,कारखाना से निकाल,
क्यों पूछ रही हो उटपटांग सवाल,
लंबे-लंबे गन्ना से निकला ऊखरस,
गर्मी के दिनों में मचाता है धमाल.

एक गिलास पी लो, निचोड़ कर नींबू,
फिर राह चले जाओ, सो जाओ तंबू,
ज्यादा ले जाओ बनाना रस पकवान,
भूरे-भूरे चौड़ा, संग में फरा का बंबू.

शौक पूरा होते तक,खाना जी भर कर,
मन करे दोबारा तो,बुलाना मुझे घर पर,
साइकिल में रस डिब्बा बांधकर आऊंगा,
हाथों में बर्तन लिए,खड़ी रहना द्वार पर.

रस बेचकर अपने परिवार पालता हूं,
फटी चादर को मखमल में बदलता हूं,
सो जाते हैं किसी रात सभी भूखे पेट,
फिर सुबह रस ले लो लोगों से कहता हूँ.

*****

बचपन की होली

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू"

खूब खेलते मिलकर होली,
बरसाते रंगों की गोली.
मौज मनाते हम तो प्यारे,
लाल गुलाबी दिखते सारे.

मम्मी पापा, दादा दादी,
देते थे हम को आजादी.
रंगों से हम खूब नहाते,
इक दूजे को भी नहलाते.

नहीं समय का कोई बंधन,
खुशियों से जीते थे जीवन.
यारी दोस्ती खूब निभाते,
साथ बैठ कर खाना खाते.

कहाँ गयी अब वैसी होली,

फिकी दिखती इसकी गोली.

नहीं खेलते बच्चे अब के,

घर के अंदर रहते छुप के.

*****

नारी के रूप रंग

रचनाकार- अशोक कुमार यादव

यह नारी अर्धांगिनी जगत कल्याणी,
कुरुक्षेत्र समर में सिंह वाहिनी रुद्राणी,
सर्वजन हिताय विश्व रक्षिका जन्मभूमि,
पतित पावनी चतुर्दिक सम्मोहिनी जननी,
नारी: साहसी शक्ति शालिनी विश्व रक्षिका.
सुन्दरी: रूप यौवन से, सुसज्जित लतिका,
श्रृंगार: आठों अंगों में धारण की आभूषण,
स्वच्छंद: स्वयं मुक्त जीवन जीने की प्रतिरूपण.
त्याग: स्वयं को समर्पित कर जीवन इच्छिका,
ममता: अपने संततियों को दुलार करती रक्षिका,
लक्ष्मी: धन की वर्षा करने वाली धातु की देवी,
साहस: रग-रग में भरा बल की महा क्रांति देवी.
तितली: मुक्त गगन में उड़ने वाली रंग-बिरंगी,
चिड़ियां: फुदक कर चलने वाली उड़ती सतरंगी,
अपराजिता: कभी ना हार , मानने वाली युद्धकारिणी,
स्नेह सुधा: प्यार अमृत की मधुर प्याली प्रदायिनी.

क्षमा: गलतियों को भुलाकर माफ करने वाली,

दया: निरीह प्राणियों पर

करुणा की भाव रखने वाली

ममतामयी: नन्हे शिशुओं पर अपनत्व की भावना.

उपकारणी: दूसरों की सदा सहायता कर कामना.

सहयोगी: कार्यों में मदद करने वाली कार्मिक.

सिद्धिदात्री: कौशल अर्जित करने वाली धार्मिक.

स्वर्गिक: निकेतन को बनाती स्वर्ग से सुंदर.

समाज सुधार: नई दिशा दिखाती जन को कुंदर.

संस्कृति: सामाजिक गुणों के स्वरूप अंतर्निहित.

संस्कार: मन, वचन और कर्म से पवित्र चिन्हित.

सभ्यता: सकारात्मक, प्रगतिशील,उन्नत द्योतक

ज्ञान: संज्ञान अर्जित कराती अभ्यास विद्या बोधक

सत्य: परीक्षार्थी बन बार-बार सत्य की खोज

चंचल मन, कोमल बदन, फुलवारी सुवास, भोज

आधुनिका: नए जमाने की विकासशील प्रौद्योगिकी

सफलता, शांति, सुकून, पथ, आशा, लक्ष्य, अनुवांशिकी

सशक्तिकरण, ज्वलंत प्रश्न, श्रम, मंजिल, प्रेरणा, बल

आत्मनिर्भर, विचार, समानता, युग, संज्ञान, काल

भविष्य, खुशी, विवेक, प्रतिशोध, प्रहार, आवाज, गरिमा

आशीर्वाद, अस्तित्व, सम्मान, अधिकार, ज्योति, सीमा

ज्वाला, प्रतिभा, गीत, संगीत, कविता, नृत्य, सृजन, इच्छा

दुआ, कर्म, प्यार, मंदिर, इज्जत, पालनहारी, प्रकृति, परीक्षा.

*****

पंचतंत्र की कथाएँ

गौरैया और बंदर की कहानी

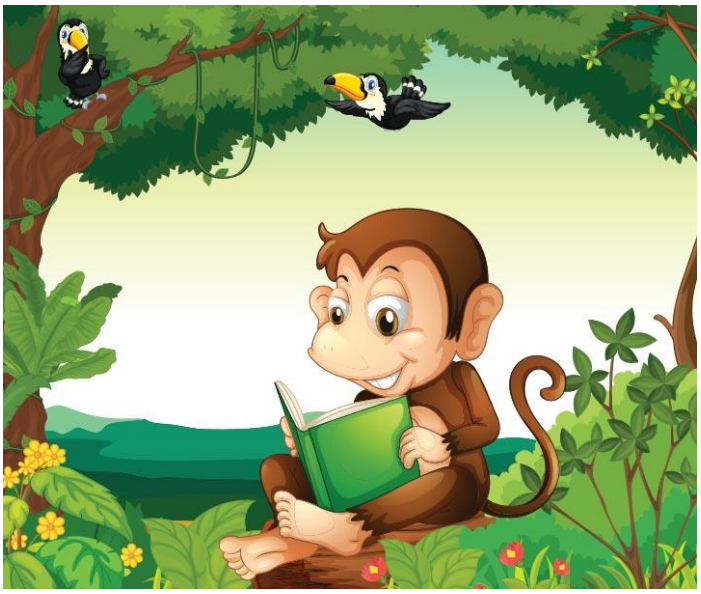

एक बार की बात है, एक जंगल के किसी घने पेड़ पर एक गौरैया का जोड़ा रहता था. वो उस पेड़ पर अपना घोंसला बनाकर गुजर-बसर करते थे. दोनों खुशी-खुशी अपना जीवन बीता रहे थे. फिर आया सर्दियों का मौसम, इस बार बहुत ही कड़ाके की ठंड पड़ने लगी. ठंड से बचने के लिए एक दिन कुछ बंदर उस पेड़ के नीचे ठिठुरते हुए पहुंचे. तेज ठंडी हवाओं से सभी बंदर कांप रहे थे और बहुत ही परेशान थे. पेड़ के नीचे बैठने के बाद वो आपस में बात करने लगे कि काश कहीं से आग सेंकने को मिल जाती तो ठंड दूर हो जाती. उसी बीच एक बंदर की नजर पास पड़ी सूखी पत्तियों पर पड़ी.

उसने दूसरे बंदरों से कहा, “चलो इन सूखी पत्तियों को इकट्ठा करके जलाते हैं.” उन बंदरों ने पत्तियों को एक जगह इकट्ठा किया और उन्हें जलाने का उपाय करने लगे. ये सब पेड़ पर बैठी गौरैया देख रही थी. ये सब देखकर उससे रहा नहीं गया और वो बंदरों से बोल पड़ी, “तुम लोग कौन हो?, देखने में तो तुम आदमियों की तरह लग रहे हो, हाथ-पैर भी हैं, तुम अपना घर बनाकर क्यों नहीं रहते?”

गौरैया की बात सुनकर ठंड से कांप रहे बंदर चिढ़ गए और बोले, “तुम अपना काम करो, हमारे काम में पड़ने की जरूरत नहीं है.” इतना कहने के बाद वो फिर आग जलाने के बारे में सोचने लगे और अलग-अलग तरीके अपनाने लगे. इतने में बंदरों की नजर एक जुगनू पर पड़ी. वो चिल्लाने लगा, “देखो ऊपर हवा में चिंगारी है, इसे पकड़कर आग जलाते हैं.” यह सुनते ही सारे बंदर उसे पकड़ने

के लिए अलग-अलग तरीके अपनाने लगे. ये देख चिड़िया फिर बोल पड़ी, “यह जुगनू है, इससे आग नहीं सुलगेगी.” तुम लोग दो पत्थरों को घिसकर आग जला सकते हो.”

बंदरों ने चिड़िया की बात को अनसुना कर दिया. कई कोशिश के बाद उन्होंने जुगनू को पकड़ लिया और फिर उससे आग जलाने की कोशिश करने लगे, पर वो इस काम में कामयाब नहीं हो पाए और जुगनू उड़ गया. इससे बंदर निराश हो गए. इतने में फिर से गौरेया बोल उठी, “आप लोग मेरी बात मानिए, पत्थर रगड़कर आप आग जला सकते हैं.” इतने में एक गुस्साए हुए बंदर से रहा न गया और उसने पेड़ पर चढ़कर गौरेया के घोसले को तोड़ दिया. यह देख चिड़िया दुखी हो गई और डर कर रोने लगी. इसके बाद वो उस पेड़ से उड़कर कहीं और चली गई.

*****

सप्ताह के दिन

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र

दिन सप्ताह में होते सात,
आओ! सीखें अच्छी बात.

प्रतिदिन का अलग है नाम,
मन से करना अपने काम.

प्रथम दिवस होता रविवार,
छुट्टी है, न सिर पर भार.

सोमवार से है स्कूल,
समय से जाना, करें न भूल.

मंगलवार को मंगल करना,
किसी जीव को तंग न करना.

बुधवार को बुद्धि बढ़ाएँ,
पढ़-लिख बुद्धिमान कहलाएँ.

गुरु जी का दिन है गुरुवार,
गुरुजन का करना सत्कार.

शुक्रवार का दिन है खास,
खेलें-कूदें, हों न उदास.

है शनिवार सातवाँ दिन,
पूरे कार्य करें गिन-गिन.

सात दिनों का चलता क्रम,
समय न रुकता, तोड़ें भ्रम.

*****

परीक्षा

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू"

सुनो परीक्षा दिन है आया,
कॉपी पुस्तक मन को भाया.
करे खूब हम रोज पढ़ाई,
नहीं करेंगे कभी लड़ाई.

दादी अम्मा सुबह उठाती,
घड़ी परीक्षा याद दिलाती.
आँख नहीं खुलती जब भाई,
करती दीदी खूब धुलाई.

दादा जी भी नजर टिकाते,
पुस्तक हाथों में पकड़ाते.
अंग्रेजी पापा समझाते,
पढ़ो नहीं तब आँख दिखाते.

बंद हुई सारी शैतानी,
तुम भी सुनो मेरी कहानी.
अच्छे से तुम सभी पढ़ोगे,
आगे कक्षा तभी बढ़ोगे.

शिक्षक हम को देते शिक्षा,
देते हम हर साल परीक्षा.
अव्वल नम्बर जब भी आते,
मम्मी पापा खुश हो जाते.

*****

अमर शहीद भगतसिंह

रचनाकार- अशोक कुमार यादव

भारत के हो तुम भगत वीर सपूत,
आज़ादी के कर्मनिष्ठ क्रांतिकारी.
समूल उखाड़े अंग्रेज रूपी लताएं,
चीखे फिरंगी गूंज उठी किलकारी.

लेकर बंदूक और बम गोले हाथों में,
जब चलते थे गलियों में बन शेर सदृश्य ,
डर के मारे तितर-बितर होते थे गोरे,
चापलूस भेड़िये हो जाते थे अदृश्य.

थर-थर कांप-कांप कर भागे अंग्रेज,
उनकी रोम-रोम जयहिंद पुकार उठती.
फिर कभी ना लौट कर आएंगे हिंद में,
गोरी मेम रोकर अपने पति से कहती.

जब तक जिंदा है भगत,राज,सुखदेव,
तब तक जन पर दमन कर ना सकेगा.
मुर्दा जन मन अब जीवित हो चुका है,
बांधकर बोरिया बिस्तर इंग्लैंड भागेगा.

गांधी अहिंसा से अब काम न चलेगा,
भगत सिंह की हिंसा तुम अपना लो.
चुन-चुन कर मारो धारदार हथियार से,
दुल्हन रूपी मृत्यु को गले लगा लो.

*****

अधूरी कहानी पूरी करो

पिछले अंक में हमने आपको यह अधूरी कहानी पूरी करने के लिये दी थी–

चार भाइयों की कहानी

एक बार की बात है एक गाँव में एक मछुआरा रहता था उसके चार लड़के मोहन, सोहन , अनिल और कपिल थे. मछुआरा नदी में जाकर मछलियाँ पकड़ता था और उसको लेकर जाकर मार्किट में बेच देता था. जिससे उनके खाने का गुजारा ही केवल हो पाता था. एक दिन मछुआरा अपने चारों लड़कों को बुलाता है और कहता है बेटों अब तुम बड़े हो चुके हो मेरे पास तुम लोगों को देने के लिए कुछ भी नहीं है. इस मछुआरे के काम में ज़्यादा कमाई नहीं है तुम शहर में जाकर कोई कमाई का हुनर सीखो और जिससे तुम कमाई कर करो. अपने पिता की यह बात सुनकर सभी भाई मान गए और अगले दिन शहर के लिए चल दिए.

थोड़ी दूर जाने पर उनको चार रास्ते नज़र आये उनमे से बड़ा भाई बोला हम सबको इन अलग अलग रास्तों पर जाना चाहिए और चार साल बाद हम यही पर मिलेंगे. सभी भाई इस बात को मान गए और अलग अलग रास्ते पर निकल गए.

इस कहानी को पूरी कर हमें जो कहानियाँ प्राप्त हुई उन्हें हम प्रदर्शित कर रहे हैं.

संतोष कुमार कौशिक द्वारा पूरी की गई कहानी

सभी भाइयों को अलग-अलग रास्ते में जाते देख चौराहे के पास पेड़ की छांव में बैठे संत ने आवाज लगाई. भाइयों आप सब एक साथ आए हो और अलग-अलग रास्ते में क्यों जा रहे हो? तभी बड़ा

भाई संत जी को अपने पिताजी की कही बातों को बताया. संत ने कहा आप लोगों को शहर में जाकर कमाई का हुनर सीखना है तो ये मेरी पाँच अनमोल बातें याद रखना.

1. जो तुम्हारा भला करे उसका बात मान लेना.
2. कभी भी किसी की दिल दुखाने की बात नहीं करना.
3. तुम जहाँ भी जाओ, जहाँ भी रहो, अपने कार्य को निष्ठापूर्वक से करना.
4. अधिक योग्य व्यक्ति के सामने जब तक खुद अधिक योग्य न बन जाओ, तब तक उनके बराबरी ना करना.
5. कहीं से भी अगर ज्ञान की दो बातें सुनने को मिले तो उसे जरूर सुनना.

संत ने कहा- "जो भी व्यक्ति ये पाँच बातों को याद रखेगा वह रंक से राजा, गरीब से अमीर, बुद्धू से बौद्ध बन जाएगा. " सभी भाइयों ने संत की बातों को सुनकर उसे प्रणाम कर, अपने-अपने नियत रास्ते में निकल गए. मोहन, सोहन और अनिल संत की बातों को हल्के में लेते हुए शहर पहुँचे. जो भी साथी मिले उसी के साथ रम गए. मोहन को डाकू की संगति, सोहन को शराबी और अनिल को जुआरी की संगति मिली. जैसे-जैसे तीनों भाई को साथी मिला उसी प्रकार ढल गया. तीनों भाई सुबह होते ही काम में निकल जाते, जो भी कमाते शाम को मौज मस्ती करते हुए खाने पीने में मस्त रहते.

इधर छोटा भाई कपिल संत के बताए बातों का चिंतन-मनन करते हुए पड़ोसी राज्य में पहुँच गया. वहाँ देखा कि राजा,सैनिक की भर्ती कर रहे हैं. वहाँ पहुँचकर राजा साहब को अपना परिचय दिया और आने का मकसद बताया. राजा उस युवक को देखा उसकी कद-काठी ठीक थी. उसका स्वभाव भी उसे अच्छा लगा और सैनिक पद पर उसे रख लिया.

एक दिन राजा एवं उनके सैनिक एक नगर से दूसरे नगर जा रहे थे. बीच रास्ते में राजा एवं सिपाही को प्यास लगी. कहीं आसपास पानी नजर नहीं आ रहा था. एक राहगीर को आता देख उससे पूछा-भाई पानी कहाँ मिलेगा?राहगीर ने बताया कि यहाँ से दो किलोमीटर दूरी पर बावड़ी है वहाँ शीतल एवं मीठा जल मिलेगा. लेकिन एक दिक्कत है,वहाँ एक दैत्य रहता है जो पानी लेने जाता है उसे मार देता है. अगर दैत्य का सामना कर सकते हो तो वहाँ पानी मिल जाएगा. राजा उस राहगीर की बातों को सुनकर उसी युवक को कहा-ये युवक घड़ा उठा और बावड़ी से पानी भरकर ले आओ. युवक ने सोचा-पानी लेने जाऊँ तो वह दैत्य मुझे मार सकता है. तभी उसे संत की पहली बातें याद आई-"जो तुम्हारा भला करे उसका बात मान लेना. " यह राजा मुझे नौकरी दिये हैं. मैं इसका अन्न खाता हूँ. यह सोचकर वह बावड़ी चला गया. वह बावड़ी में पहुँचकर घड़ा में पानी भरकर, वापस सीढ़यों से आ रहा था. तभी दैत्य नजर आया और कहने लगा(अपनी गोद में रखे अपनी पत्नी की कंकाल को दिखाकर) ये युवक,पानी लेने आया है ठीक है लेकिन एक बात बताओ मेरी पत्नी कितनी सुंदर

दिखती है. मन ही मन सोचा-पत्नी कहाँ है यह तो कंकाल है. ऐसा बोल दिया तो इसके दिल में ठेस पहुँचेगा. उसे याद आया हमें संत जी ने दूसरी बातें कहा था-" कभी भी किसी की दिल को दुखाने की बातें नहीं करना. " तभी वह दैत्य से कहने लगा तुम्हारी पत्नी बहुत सुंदर है. बहुत अच्छी लग रही है, तुम्हारी पत्नी जैसी खूबसूरत औरत कहीं नहीं देखा. दैत्य ने कहा- तुम सही बोल रहे हो? आज तक कोई भी युवक मेरी पत्नी को खूबसूरत नहीं कहा है. तुम पहले ऐसे युवक हो जो मेरी पत्नी को सुंदर कहा है. मैं अपनी पत्नी से बहुत प्रेम करता हूँ. तूने मेरा दिल जीत लिया है. पानी तो ले जाओगे ही, मैं खुश हूँ कुछ और वर माँग लो. तभी वह युवक उसके पास एक वचन माँगा और कहा-हे दैत्य राज! यह बावड़ी की शीतल एवं मीठा जल आने जाने वाले राहगीर का प्यास बुझा सकता है. जब तक तुम रहोगे तब तक कोई पानी नहीं पी सकेगा इसलिए तुम केवल एक काम करो इस बावड़ी को छोड़कर किसी अन्य जगह निवास करो. तब दैत्य ने कहा-मैं तुझे वचन दिया हूँ इसलिए अभी मैं बावड़ी से मुक्त होता हूँ. यह कहकर बावड़ी से वह चला गया. तब युवक राजा के पास आकर आप बीती सारी बातें सुनाई और कहा महाराज चलिए सभी लोग वहाँ पहुँचकर शीतल जल का सेवन कीजिए. राजा उस युवक का हिम्मत देखकर बहुत खुश हुआ. वहाँ जाकर सब लोग पानी पीते हैं. वापस अपने नगर में आकर उस युवक से प्रभावित होकर उसे अपना अंगरक्षक बना देता है. युवक का जिंदगी सुधर गया. वह राजमहल में पहुँच गया. राजा जैसे खाता था उस युवक को भी वैसे ही भोजन देता था. तभी संत की तीसरी बातें याद आई-"तुम जहाँ भी जाओ,जहाँ भी रहो अपने कार्य को निष्ठापूर्वक से करो. "उसने अपना अंगरक्षक का कार्य निष्ठापूर्वक से करने लगा. उसके कार्य को देखकर राजा बहुत खुश था.

एक दिन राजा के भाई उस युवक से मिलने आया. वह अपने बड़े भैया राजा से ईर्ष्या रखता था. वह युवक को कहने लगा तुम राजा को मार दोगे तो तुम्हें इस राज्य का सेनापति बना दिया जाएगा और आधा राज्य भी दे दिया जाएगा. तभी युवक को संत की चौथी बातें याद आई-"अधिक योग्य व्यक्ति के सामने जब तक खुद अधिक योग्य ना बन जाओ,तब तक उनके बराबरी ना करना. " वह राजा के भाई से कहा- मैं इतना योग्य नहीं हूँ और न ही मैं राजा को मार सकता हूँ. तब राजा के भाई को डर लगने लग गया कि वह राजा साहब को मेरे बारे में न बता दे. यह सोच कर वह पहले ही राजा के पास चला गया और अंगरक्षक के बारे में राजा को कहा- वह युवक आपको मारने की बात कह रहा था. राजा ने कहा युवक के ऊपर भरोसा किया था. मुझे विश्वास नहीं हो रहा है. तब राजा ने अपने भाई से पूछा-मुझे क्या करना चाहिए. तभी राजा के भाई ने कहा इसे दस किलोमीटर दूर हमारा भवन बन रहा है वहाँ रखवाली करने के लिए भेज देते हैं. राजा मान जाता है. इधर राजा की भाई अपनी सैनिक को कहता है जैसे ही अंगरक्षक वहाँ पहुँचेगा उसे मार डालना. तभी युवक जाते हुए संत की पाँचवी बातें याद आई-"कहीं से भी हो अगर ज्ञान की दो बातें सुनने को मिले तो उसे जरूर सुनना. "आगे

संत का प्रवचन चल रहा था उसे सुनने को रुक गया. इधर राजा के भाई अपना भेस बदल कर युवक को मारा है कि नहीं,जानने के लिए उस भवन में पहुँच गया. जहाँ अंगरक्षक को पहुँचना था. राजा के भाई को अंगरक्षक समझकर उसी के सैनिक ने मार डाला. कुछ क्षण पश्चात अंगरक्षक वहाँ पहुँचा और उसके भाई के बारे में राजा को बताया. राजा को सत्य की पहचान करने में देर न लगा. अंगरक्षक की कर्तव्यनिष्ठ सेवा को देखकर अपनी पुत्री राजकुमारी को युवक के साथ शादी करवाकर उस युवा को अपना उत्तराधिकारी बना दिया. तब वह युवक राजा बनने के पश्चात सबसे पहला काम राज घराने के मुख्य द्वार पर यह पाँच बातें अंकित कराई. जो भी व्यक्ति पाँच बातों को याद रखेगा, उम्मीद है कि वह व्यक्ति रंक से राजा बन जाएगा.

देखते ही देखते 4 साल पूरा हो गए. अपने सैनिक के साथ युवक भी सभी भाई से अपने नियत स्थान पर मिले और वापस घर चले गए. पिताजी ने सभी का हालचाल पूछा. सभी भाई ने अपनी-अपनी आप बीती सुनाई. पिताजी ने कहा कपिल से सीखो जिंदगी की पाँच अनमोल रतन जिसे अपना दिल में उतार लो. मोहन, सोहन, अनिल अपने किए हुए कार्य पर शर्मिंदा थे. कपिल अपने पिताजी एवं सभी भाइयों को अपने राज्य में उचित स्थान दिया.

हरनारायण चन्द्रा द्वारा पूरी की गई कहानी

एक बार की बात है, एक गाँव में एक मछुआरा रहता था; उसके चार लड़के मोहन, सोहन, अनिल और कपिल थे. मछुआरा नदी में जाकर मछलियाँ पकड़ता था और उसको ले जाकर मार्केट में बेच देता था, जिससे उनके खाने का गुजारा ही केवल हो पाता था. एक दिन मछुआरा अपने चारों लड़को को बुलाता है और कहता है, बेटों अब तुम बड़े हो चुके हो मेरे पास तुम लोगों को देने के लिये कुछ भी नहीं है,इस मछुआरे के काम में ज़्यादा कमाई नहीं है,तुम शहर में जाकर कोई कमाई का हूनर सीखो और जिससे तुम कमाई कर लो, अपने पिता की यह बात सुनकर सभी भाई मान गए और अगले दिन शहर के लिए चल दिये. थोड़ी दूर जाने पर उनको चार रास्ते नज़र आये,उनमें से बड़ा भाई बोला हम सब को इन अलग-अलग रास्तों पर जाना चाहिए और चार साल बाद यहीं पर मिलेंगे, सभी भाई इस बात को मान गए और अलग-अलग रास्ते पर निकल गए.

चारो भाई अपने-अपने रास्तों पर चलते हुए अलग-अलग शहर पहुँच गए. मोहन शहर पहुँचकर काम की तलाश करने लगा और उसे एक दर्ज़ी की दुकान में काम मिल जाता है. मोहन बड़े लगन के साथ सिलाई का काम सीखने लगता है और धीरे-धीरे वह एक कुशल दर्ज़ी बन जाता है. धीरे-धीरे दर्ज़ी की दुकान में ग्राहक बढ़ने लगते हैं और मोहन कपड़ो में नई नई डिजाइन से सिलाई किया करता था. फिर वह उसी शहर में अलग दुकान खोल लेता है और धीरे-धीरे शहर का सबसे बड़ा दर्ज़ी बन जाता है. फिर वहाँ रहकर मोहन ख़ूब पैसा कमाते हुए अपना जीवन यापन करने लगता है.

मछुआरे का दूसरा बेटा सोहन भी शहर पहुँचकर काम की तलाश करने लगता है और उसे एक होटल में बावर्ची की नौकरी मिल जाती है,और वह वहाँ रहकर धीरे-धीरे तरह तरह का व्यंजन व पकवान बनाना सीख जाता है, फिर वह उस होटल का मशहुर रसोईया बन जाता है. सोहन की बनायी हुई मिठाइयों की मांग बढ़ने लगी और वह देखते ही देखते धनवान हो गया.

मछुआरे का तीसरा बेटा अनिल भी शहर पहुँचकर काम ढूँढने लगा और उसे एक पेन्टर के पास काम मिल गया.अनिल थोड़ा आलसी था लेकिन लगातार पेन्टर के साथ रहकर हल्की फुल्की पेंटिंग का कार्य कर लेता था, धीरे-धीरे वह तरह तरह के चित्रों व कलाकृतियों का चित्रण करना सीख जाता है,कभी कभी गलती हो जाने पर उसे मालिक की फटकार भी सुनना पड़ता था. लगातार अभ्यास से अनिल की पेंटिंग अच्छी दामों में बिकने लगी और उसकी आमदनी में इज़ाफ़ा होता चला गया.

मछुआरे का चौथा बेटा कपिल भी अपने भाइयों की तरह शहर पहुँचकर रोजगार की तलाश करने लगा और उसे सोने चाँदी की आभूषण बनाने वाली ज्वेलरी शॉप में काम मिल जाता है. कपिल अपने सभी भाइयों में सबसे होनहार व ईमानदार था, साथ ही वह हमेशा निर्धनों का मदद किया करता था. बड़े ही लगन के साथ अपने काम किया करता था, फिर वह धीरे-धीरे सोने चाँदी की नई नई कलाकृतियों वाले आभूषणों का निर्माण कर लेता था.उनके द्वारा बनाई गई आभूषणों की मांग बढ़ने लगी फिर उसे सोने चाँदी की आभूषण बनाने वाली बडी कंपनी में नौकरी मिल जाती है और वह ख़ूब धन कमाने लग जाता है.

फिर समय बितता जाता है और चार साल बाद चारो भाई उसी चौराहे पर वापस आते हैं जहाँ से वे अलग-अलग शहरों के लिए निकले थे. चारो भाइयों में अपार प्रशन्नता होती है और परस्पर बातें करते हुए अपने घर आते हैं, मछुआरा अपने-अपने चारो बेटों को देखकर खुश हो जाता है और उनके चारो पुत्र उनको प्रणाम करते हैं. फिर चारो पुत्र बारी-बारी से इन चार सालों में सीखे हुए अपने हुनरों को अपने पिता जी को बतलाते हैं. अपने बेटों की बातें सुनकर मछुआरे की ख़ुशी का ठीकाना नहीं रहता है, और वह कहता है बेटों तुम लोग यहाँ रहते तो ये सब अलग-अलग हूनर नहीं सिख पाते केवल मछली पकड़ते रह जाते लेकिन बाहर शहर जा कर तुम लोग हुनरमंद हो गए, अब मैं निश्चिंत हो गया हूँ की तुम लोग अब अपना जीवन यापन आसानी से कर सकते हो. फिर वह मछुआरा अपने चारो बेटे की शादी यथायोग्य लड़कियों से कर देता है और उस मछुवारे का परिवार सुखी पूर्वक जीवन यापन करने लगता है.

अगले अंक के लिए अधूरी कहानी

मूर्ख राजा और चतुर मंत्री

एक समय की बात है दियत्स नाम की नगरी एक नदी किनारे बसी हुई थी. वहां का राजा बहुत ही मूर्ख और सनकी था. एक दिन राजा अपने मंत्री के साथ संध्या के समय नदी के किनारे टहल रहा था. तभी उसने मंत्री से पूछा, “मंत्री बताओ यह नदी किस दिशा की ओर और कहाँ बहकर जाती है?”

“महाराज, यह पूर्व दिशा की ओर बहती है और पूर्व की ओर स्तिथ देशो में बहकर समुन्द्र में मिल जाती है.”, मंत्री ने उत्तर दिया. यह सुनकर राजा बोला, “यह नदी हमारी है, और इसका पानी भी हमारा है, क्या पूर्व में स्तिथ देश इस नदी के पानी का उपयोग करते हैं.”

“जी, महाराज, जब नदी उधर बहती है तो करते ही होंगे.”, मंत्री ने उत्तर दिया. इस पर राजा बोला,”जाओ नदी पर दीवार बनवा दो, और सारा का सारा पानी रोक दो, हम नहीं चाहते है की पूर्व दिशा में स्तिथ देशों को पानी दिया जाये.”

“लेकिन, महाराज इससे हमे ही नुकसान होगा.”, मंत्री ने उत्तर दिया. “नुकसान! कैसा नुकसान? नुकसान तो हमारा हो रहा है, हमारा पानी पूरब के देश मुफ्त में ले रहे हैं. और तुम कहते हो की नुक्सान हमारा ही होगा? मेरी आज्ञा का शीघ्र से शीघ्र पालन करो.”, राजा गुस्से में बोला.

इसके आगे क्या हुआ होगा? इस कहानी को पूरा कीजिए और इस माह की पंद्रह तारीख तक हमें kilolmagazine@gmail.com पर भेज दीजिए.

चुनी गई कहानी हम किलोल के अगले अंक में प्रकाशित करेंगे.

जल बचाओ

रचनाकार- सुश्री सुशीला साहू

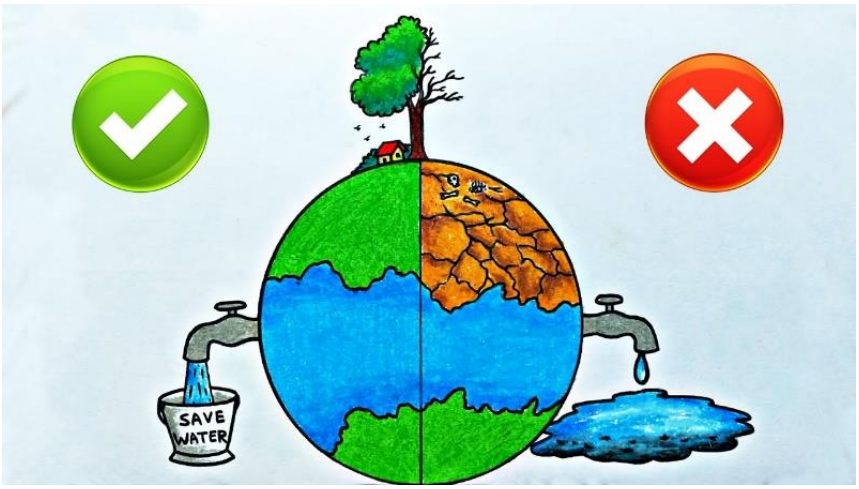

धरती की हम शान बढ़ाएं,
आओ मिलकर जल बचाएं.
बचे पर्यावरण बचेगा जीवन,
स्वस्थ रहेगा हमारा तन-मन.
बर्फ सा शीतल स्वरूप पाएं,
आओ मिलकर जल बचाएं.
धरती की हम शान बढ़ाएं.

जल संरक्षण दायित्व हमारा,
अमूल्य संसाधन है जग सारा.
बूंद-बूंद से ही भरेगा भू-जल,
तभी सुरक्षित रहेगा भू-तल.
धरती माता की प्यास बुझाएं,
आओ मिलकर जल बचाएं.
धरती की हम शान बढ़ाएं.
जल जीवन का अमोल रतन,

इसे बचाकर सदा करें जतन.

एक कदम संरक्षण की ओर,

सुवासित होगा कल का भोर.

जल बरबादी पर रोक लगाएं,

आओ मिलकर जल बचाएं.

धरती की हम शान बढ़ाएं.

*****

पिता

रचनाकार- अशोक कुमार यादव

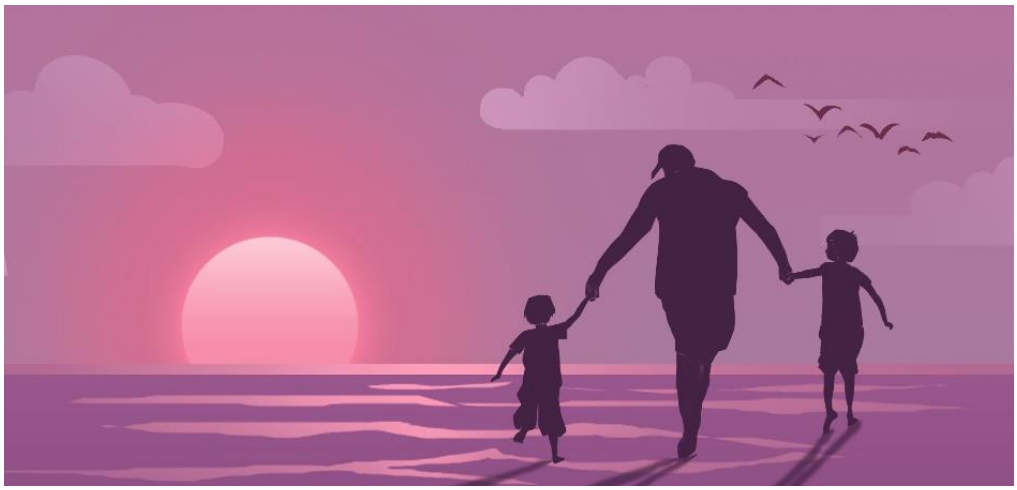

पिता प्रतीक है कर्म का,
पिता प्रतीक है धर्म का.
पिता है परमेश्वर के रूप,
पिता प्रतीक है मर्म का.

पिता आत्मज्ञान गुरु है,
पिता से जीवन शुरू है.
पिता भाव तन्मयता का,
पिता संघर्ष मैदान कुरु है.

पिता सहज सुगम रास्ता,
पिता को कुटुंब से वास्ता.
पिता अन्नदाता जगत का,
पिता से है अखंडित नाता.

पिता है विद्या चेतना बोध,
पिता है विज्ञान नवीन शोध.
पिता है नाविक सदन का,
पिता घोर तिमिर में है कौंध.

पिता उन्मुक्त गगन के सूर्य,
पिता है कठोर और माधुर्य.
पिता सुख,आनंद खजाना,
पिता है जीवन प्रेम प्राचुर्य.

*****

प्रतिष्ठा बनाए रखें

रचनाकार- डॉ. माध्वी बोरसे

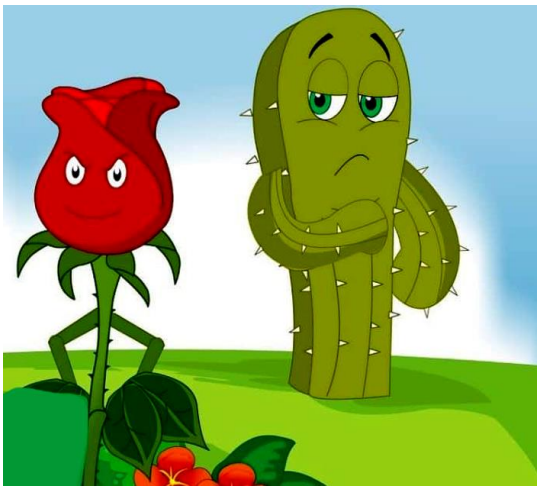

एक बार की बात है, दूर एक रेगिस्तान में, एक गुलाब था; जिसे अपने सुंदरता पर बहुत अभिमान था. उसकी एकमात्र शिकायत थी कि एक बदसूरत कैक्टस उसके बगल में बढ़ रही थी.

हर दिन, सुंदर गुलाब कैक्टस का अपमान करता था और उसके अच्छे ना दिखने पर उसका मजाक उड़ाता था, जबकि कैक्टस चुप रहता था. आस-पास के अन्य सभी पौधों ने गुलाब को समझाने की कोशिश की.

एक दिन चिलचिलाती गर्मी में रेगिस्तान सूख गया और पौधों के लिए पानी नहीं बचा. गुलाब जल्दी मुरझाने लगा. उसकी सुंदर पंखुड़ियाँ सूख गईं, अपना सुंदर सा आकर्षण अब गुलाब खोने लगा.

कैक्टस की ओर देखते हुए, उसने देखा कि एक गौरैया पानी पीने के लिए अपनी चोंच को कैक्टस में डुबा रही है. अपने पिछले किए गए अपमान पर गुलाब ने कैक्टस से शर्मिंदगी से पूछा और मदद मांगी कि क्या उसे कुछ पानी मिल सकता है. दयालु कैक्टस आसानी से सहमत हो गया, उन दोनों को अत्यंत गर्मी में, दोस्तों के रूप में मदद करने लगा.

जीवन में समय और स्थिति, किसी की भी बदल सकती है, अतः कभी किसी का अपमान ना करें एवं किसी को तुच्छ ना समझे.

जीवन में, सब कुछ खूबसूरत होना नहीं होता, हमें हर प्रकार से खूबसूरत होना चाहिए, हमारे तन के साथ-साथ मन भी आकर्षित होना चाहिए और मन का आकर्षित होना अत्यंत आवश्यक है. जीवन में

हर एक की अपनी खूबसूरती है, अगर हम किसी की खूबसूरती को पहचान ना सके तो कम से कम उसका अपमान ना कीजिए.

जहां काम आवे सुई, कहा करे तरवारि..

रहीम ने इस दोहे में बताया है कि हमें कभी भी बड़ी वस्तु की चाहत में छोटी वस्तु को फेंकना नहीं चाहिए, क्योंकि जो काम एक सुई कर सकती है वही काम एक तलवार नहीं कर सकती. अत: हर वस्तु का अपना अलग महत्व है. ठीक इसी प्रकार हमें किसी भी इंसान को छोटा नहीं समझना चाहिए.

हर एक का अपना महत्व है, उस महत्व को पहचानिए, सभी का आदर सम्मान कीजिए, अगर ऐसा नहीं कर सकते तो कम से कम अपमान ना कीजिए. इस धरती पे ईश्वर ने सभी को किसी ना किसी कार्य के लिए भेजा है, कहीं ना कहीं सभी जरूरी है, अपने कार्यों से सभी की मदद करें और सभी का सम्मान करें, जिससे हमें कभी किसी की मदद की जरूरत पड़ी, तो हमें इस कहानी के, गुलाब की तरह शर्मिंदा ना होना पड़े.

कहते हैं सोच खूबसूरत हो, तो सब खूबसूरत नजर आता है और देखने वालों की आंखों में सुंदरता होती है, तो वह सुंदरता को हमें हमारे अंतर्मन में लाना अत्यंत आवश्यक है.

हम किसी का एक क्षण में अपमान कर देते हैं, पर जिसका करते हैं उसे तब तक चैन नहीं मिलता, जब तक वह उस अपमान का कर्ज ना चुका दें.

जीवन में हर एक इंसान, इस कहानी के कैक्टस पौधे की तरह दयालु नहीं होता है, याद रखिए कि जिस समय हम किसी का अपमान कर रहे होते हैं तो साथ ही साथ हम अपना भी सम्मान खो रहे होते हैं.

कुछ लोग सही समय का इंतजार करते हैं, कि कब अपने अपमान का बदला ले सके, क्योंकि यह इंसान को अंदर तक ठेस पहुंचाती है. अपमान करना इंसान के स्वभाव में होता है परंतु सम्मान करना हमारे संस्कार में, जी संस्कारों की सही भाषा हमें जानने की आवश्यकता है और सम्मान करना

*****

मतलब की दुनिया

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू"

मतलब की दुनिया है यार,
नहीं रहा अब कोई प्यार.
सारे रिश्तों से अब दूर,
मिले नहीं कोई भरपूर.

काम रहे तब करते याद,
समय नहीं करते बर्बाद.
छोड़ चले अपने ही हाथ,
नहीं किसी का देते साथ.

पैसों का है सारा खेल,
छीन झपट है रेलम पेल.
चले लोमड़ी जैसे चाल,
अपने ही करते बेहाल.

मुँह से निकले मीठी बात,

सभी पीठ पर मारे लात.

कैसा कलयुग है यह राम,

रिश्तों को करते बदनाम.

*****

लोकोक्तियों में औषधियां

रचनाकार- कुमारी सुषमा बग्गा

रहे निरोगी जो कम खाय,
बिगड़े काम ना जो गम खाय.

गुरु कीजै जानि कै,
पानी पीजै छानि कै.

खाय चना,
रहे बना.

प्रात: काल जो नित्य नहाय,
ताको देखि बैद पछिताय.

त्रिफला जल से जो सिर धौवे,
बाल श्वेत उसके नहि होवे.

*****

कौन सी होली?

रचनाकार- तुषार शर्मा "नादान"

रंगों की ये, होली हम सब,
खेल सकेंगे, क्या उमंग से,
पड़ी है सारी, गलियां सूनी,
मित्र भी नहीं, कोई संग में.

फ़ीके लगते, चटक रंग भी,
फाग गीत भी, लगता फ़ीका.
नज़र लगी गयी खुशियों को,
कोई लगा दो, काला टीका.

जंग छिड़ी है, युद्ध मचा है,
देखने को क्या, यही बचा है.
हर पल अब, लगता है जी लें,
जीवन जो भी, बचा-खुचा है.

खून का रिश्ता, लाल हो रहा,
पैसा जी का जंजाल हो रहा.
लूट के अपने ही भाई को,
भाई अब मालामाल हो रहा.

स्वार्थ की दुनिया, सोच तंग है,
हंसी है झूठी, खुशी बेरंग है.
कौन सी होली, लोग खेलते,
सोच के यह, नादान दंग है.

*****

सादा जीवन उच्च विचार

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी

प्रकृति द्वारा रचित सृष्टि की 84 लाख़ योनियों में सबसे अनमोल बौद्धिक क्षमता का ख़जाना धारण करने वाली मानव योनि ने अपनी बौद्धिक क्षमता का प्रयोग कर इस सृष्टि को कहाँ से कहाँ पहुँचा दिया है. सूर्य, चंद्रमा, अग्नि, बारिश जैसी प्राकृतिक रचनाओं को भी मनुष्य निर्मित बना दिया है. इतना ही नहीं अब तो रोबोट मानव भी बना लिया है बस अब एक कमी रह गई है, मृत शरीर में जान फूंकना, जो मेरा मानना है कि मानव यह कभी नहीं कर सकेगा.

धन, माया, नाम के लिए मानव ने अपने चौबीस घंटे लगा दिए हैं और अपने जीवन को भारी तनाव के समंदर में झोंक दिया है परंतु संतुष्टि फिर भी नहीं मिलेगी क्योंकि जो भी इस पथ पर चलता है वह फिसलता ही चला जाता है और जीवन के अंतिम समय में सादा और सहज जीवन जीने की याद आती है पर तब तक सब कुछ निकल चुका होता है.

साथियों अगर हम मानव की प्रगति की बात करें तो इस विचारधारा ने अनेक सुख सुविधाओं के साथ दुख़, तकलीफों को भी जन्म दिया है, जिसका जीता जागता उदाहरण है व जलवायु परिवर्तन से होने वाली विनाशकारी तबाही. मानव ने प्रकृति के साथ बहुत खिलवाड़ किया है अब प्रकृति हमारे साथ खिलवाड़ कर रही है. अब फिर से सादा जीवन उच्च विचार की ओर लौटने का समय आ गया है.

सादा जीवन उच्च विचार की सोच सहज सरल जीवन की कुंजी है. सादगी से व्यक्ति के कार्यों में गुणवत्ता, चेतना आती है. दृष्टिकोण में स्पष्टता, इच्छाओं का सही प्रबंधन कर संतुष्टि से खुशियों के द्वार खुलते हैं. मानव के व्यवहार में दयालुता, सुविचार, मानवता, नम्रता झलकती है ऐसे मानव के समीप

द्वेष,अभिमान, जैसे विकारों को भी आने से डर लगता है क्योंकि यह रेखांकित करने वाली बात है कि जहाँ सादा जीवन रहेगा वहीं उच्च विचार, गुणवत्ता, चेतना, संतुष्टि का निवास हो जाता है और जीवन सहज, सरल खुशियों से लबालब हो जाता है.

साथियों बात अगर हम सहज, सरल जीवन की करें तो बड़े -बुजुर्गों के मुँह से सुनते आए हैं- जीवन में शांति ज़रूरी है और शांति से रहना अपने हाथ में है. शांति तभी मिल सकती है, जब जीवन सरल हो. कन्फ्यूशियस का कथन है- जीवन बेहद सरल है लेकिन हम उसे जटिल बनाने पर आमादा रहते हैं. भारतीय संस्कृति में तो वैसे भी हमेशा से सादा जीवन उच्च विचार को अहमियत दी गई है. कोई भी अस्त-व्यस्त, भ्रमित, दुविधाग्रस्त और दबाव में नहीं रहना चाहता. भीड़ चाहे लोगों की हो या वस्तुओं की, इच्छाओं की हो या अपेक्षाओं की, व्यक्ति की एकाग्रता भंग करती है और उसे जीवन के अधिक महत्वपूर्ण कार्यों के प्रति उदासीन बनाती है. भीड़ में खुद को गुम होने से बचाने का प्रयास ही सहज-सरल जीवन की कुंजी है.

सादगी का सबसे बड़ा लाभ यह है कि व्यक्ति के कार्यों में गुणवत्ता आती है. जैसे ही उसके भीतर यह चेतना आती है कि जीवन में क्या और क्यों महत्वपूर्ण है, वह इच्छाओं का सही प्रबंधन करने लगता है. इससे दुविधाएँ कम होती हैं और दृष्टिकोण में स्पष्टता आती है. समय-समय पर अपनी जरूरतों और इच्छाओं का आकलन करना जरूरी है. कई बार ऐसा भी होता है कि जिस चीज से आज सुविधा महसूस होती है, वही भविष्य में असुविधा का कारण बन जाती है. हो सकता है, बड़ा घर लेना आज किसी की ख्वाहिश हो मगर उम्र बढ़ने के साथ यही घर असुविधाजनक हो सकता है क्योंकि वह इसका रखरखाव अच्छी तरह करने में असमर्थ होता है.

सादा जीवन उच्च विचार की कहावत हमें सिखाती है कि हम अपने जीवन को और भी मूल्यवान बना सकते हैं सिर्फ व्यर्थ के धन और सामान आदि चीजों को नजरअंदाज करके. ये हमें सच्ची ख़ुशी और आतंरिक संतुष्टि प्रदान करता है. ये यह भी बताता है कि सच्ची ख़ुशी हमारे विचारों में होती है न किसी और चीजों में. ये हमें प्रेरित करती है कि हम अपनी जड़ों को पहचाने और किसी भी तरह से समृद्धि पाने वाले कार्य को नजर अंदाज करें. जीवन का सही मूल्य हमारे भौतिकवादी अधिग्रहण में नहीं है, बल्कि यह वह है जिसमें हम सोचते हैं, करते हैं, और प्रतिदिन हम कितने जीवन को छूते हैं. सादा जीवन उच्च विचार' यह कहावत हमें इस बात के लिए प्रोत्साहित करती है कि हम अपने जीवन को समृद्ध के बजाय अधिक सार्थक बनायें. यहाँ जीने के साधारण तरीके से मतलब है जीवन जीने का एक सरल और गैर-महंगा मानक. हमें केवल उन चीजों के लिए चिंता करनी चाहिए जो हमारे जीवन के लिए बेहद आवश्यक है.

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर उसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि सादा जीवन उच्च विचार भारतीय संस्कृति की हमेशा से ही नींव रही है.सादा जीवन उच्च विचार सहज सरल जीवन की कुंजी है.सादगी से व्यक्ति के कार्यों में गुणवत्ता चेतना आती है.दृष्टिकोण में स्पष्टता, इच्छाओं का सही प्रबंधन कर संतुष्टि से खुशियों के द्वार खुलते हैं.

*****

कबाड़िया

रचनाकार- अशोक कुमार यादव

ज्ञान गंगा में डुबकी नहीं लगाया,
मैं. बेबस,लाचार,निरक्षर,अनाड़ी.
पढ़ता जिस पुस्तक के पन्नों को,
गलियों में बटोर रहा हूँ कबाड़ी.

टूटे हुए कलम से नसीब लिखा,
वाह! विधि के विधान विधाता.
बेसहारा भटक रहा हूँ दरबदर,
मैं खुद को पहचान नहीं पाता.

फटी पुरानी चिथड़े में लिपटा तन,
उड़ते धूल और मिट्टी से नहाता हूँ.
आवारा सारमेय है मेरे प्रिय साथी,
कूड़ेदान की बचा खुचा खाता हूँ.

हाथों में पकड़ा हूँ चौड़ी भारी बोरी,
नजरें ढूंढ रहे हैं फालतू सामग्रियां.
पढ़ रहा हूँ जीवन के पाठ प्रतिदिन,
मेरे पास है मानो अगणित डिग्रियां.

बेच आता हूँ कौड़ी के भाव ईमान,
कर्म,दुःख,त्याग का कोई मोल नहीं.
कोई मानव आए बन कर भगवान,
बदल दे मेरी भाग्य,मैं हूँ यहीं कहीं.

*****

बाघ

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र

बाघ सदा जंगल की शान,
वन्य - जीव सुंदर बलवान.

करते हैं जंगल की सुरक्षा,
वन्य - जीवों की होती रक्षा.

डरते रहते सभी शिकारी,
अपनी जान सभी को प्यारी.

होता चोरी छिपे शिकार,
अवैध तस्करों की भरमार.

शिकारियों की भूख न मिटती,
बाघों की संख्या है घटती.

इनका भलीभांति हो रक्षण,
तब हो पाएगा संवर्द्धन.

*****

तारे

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र

दूर गगन में चमकें तारे,
लगते कितने प्यारे-प्यारे.

कब से हम सब बुला रहे हैं,
आ जाओ न, पास हमारे.

क्या ऊँचे उड़कर पहुँचे हैं,
दिप-दिप करते जुगनू सारे.

रात बहुत जब हो जाती है,
चंदामामा तुम्हें पुकारे.

छुट्टी हो तब दिन में आना,
लौट भी जाना साँझ-सकारे.

लगता इनको शीत सताती,
थर - थर काँप रहे बेचारे.

गगनयान से आएँगे हम,
मित्र घनिष्ठ सब बनेंगे न्यारे.

*****

आँख

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू"

मिलकर रहते हैं नयन, इक दूजे के संग.
हर पल करतें प्यार वो, यही हमारे अंग.

लगे चोट गर देह को, बहते आँसू धार.
बिन इसके जीवन नहीं, सूना यह संसार.

देख किसी इंसान को, जाती है पहचान.
अच्छे साथी का सखी, करती है सम्मान.

कितनी भी मुश्किल रहे,सहती फिर भी भार.
करती हैं ये सामना,नहीं मानती हार.

आओ साथी हम सभी,सीखें रहना साथ.
जीवन आये दुख कभी, छोड़ें कभी न हाथ.

*****

एक लेखक की कलम

रचनाकार- डॉ. माध्वी बोरसे

चलो बनाते हैं दोस्त परिश्रम को,
हमारे हाथों से हमेशा अच्छे कर्म हो,
विश्वास हो बहुत सारा, ना कोई भ्रम हो,
सच्चाई को बयां करने वाली, हमारी कलम हो.

जिंदगी में हम-मैं संयम हो,
प्रकृति से हमारा संगम हो,
चाहे कुछ ज्यादा या कम हो,
सच्चाई को बयां करने वाली, हमारी कलम हो.

सराहनीय बनाते हैं हमारे जन्म को,
मानवता की भलाई के लिए हमेशा खड़े हम हों,
सच के लिए लड़ सके ,हम-मैं दम हो,
सच्चाई को बयां करने वाली,हमारी कलम हो.

इंसानियत ही हमारा एक धर्म हो,
सही राह पर चलने के लिए हम सक्षम हो,
कायरता, डर, घबराहट का ना कोई वहम हो
सच्चाई को बयां करने वाली, हमारी कलम हो.

कभी क्रांतिकारी,तो कभी हम विनम्र हो,
मेहनत करके कमाना ही हमारा, कर्तव्य परम हो,
चाहे कितना भी आगे बढ़ जाए,हम-मैं ना अहम हो,
सच्चाई को बयां करने वाली, हमारी कलम हो.

*****

हमारे प्रेरणास्रोत

बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर

बच्चों आपने अपने स्कूल में संविधान दिवस मनाया होगा.यह क्यों मनाया जाता है, इसे बनाने की आवश्यकता क्या थी, ऐसे बहुत सारे विचार आपके मन में आए भी होंगे. बच्चों किसी भी देश को नियमबद्ध तरीके से चलाने के लिए संविधान बनाया जाता है. इस आवश्यकता को समझते हुए तत्कालीन कानून मंत्री डॉक्टर भीमराव अंबेडकर को समिति के अध्यक्ष के रूप में यह जिम्मेदारी दी गई.उन्होंने यह संविधान लगभग 2 वर्षों में 26 नवंबर 49 को पूर्ण किया.

जी हां बच्चों हम बात कर रहे हैं डॉक्टर बाबासाहेब अंबेडकर की जिनका जन्म 14 अप्रैल 1891 को मध्यप्रदेश के छोटे से गांव के दलित परिवार में हुआ. उनके पिता ब्रिटिश भारतीय सेना में काम करते थे. दलित परिवार में जन्म लेने के कारण बचपन से ही उन्हें अछूत माना जाता था.डॉक्टर भीमराव अंबेडकर जब स्कूल जाया करते थे,तो उन्हें विद्यालय के अन्य बच्चों के साथ बैठने और पढ़ने की अनुमति नहीं थी उन्हें स्वयं नल या मटके को छूने की इजाजत नहीं थी,यदि स्कूल का चपरासी कहीं इधर उधर चला जाता था तो उन्हें प्यास लगने पर पानी भी नहीं मिलता था,ऐसे में बचपन से ही उनके मन -मस्तिष्क में समाज में हो रहे भेदभाव,ऊंच-नीच और दासता के प्रति क्रांति ने जन्म ले लिया था.जिसके चलते उन्होंने न केवल समाज व्याप्त छुआछूत का विरोध किया, बल्कि दलित जाति के उत्थान के लिए प्रयास किए.

बाबासाहेब आंबेडकर को पढ़ने का बहुत शौक था. उन्होंने मुंबई विश्वविद्यालय से स्नातक परीक्षा और बाद में अमेरिका के कोलंबिया विश्वविद्यालय से डॉक्टरेट की उपाधि ली.जब वे अमेरिका कीकोलंबियायूनिवर्सिटी में पढ़ाई कर रहे थे, तो वह लाइब्रेरी खुलने से पहले सुबह ही पहुंच जाया

करते थे. देर रात तक वहीं पढ़ाई करते, तब लाइब्रेरी के एक कर्मचारी ने उनसे पूछा कि, तुम दिन भर किताबों के साथ ही क्यों रहते हो तो अंबेडकर जी ने बड़े विनम्र स्वभाव से उनको उत्तर दिया कि यदि मैं भी अन्य लोग जैसा ही करूंगा,तो मेरे लोगों का ख्याल कौन रखेगा.जो कि मेरे जीवन का एकमात्र उद्देश्य है.बच्चों उनके द्वारा किए गए कुछ महत्वपूर्ण कार्यों के बारे में हम बात करते हैं.

-1927 दलित अधिकारों की रक्षा के लिए अस्पृश्यता के खिलाफ कई आंदोलन किए,उन्होंने सार्वजनिक पेयजल स्रोतों से सभी को पानी लेने की इजाजत दी और सभी जातियों के लिए सभी मंदिरों में प्रवेश करने की मांग की.

-1935 मैं अंबेडकर जी को सरकारी लॉ कॉलेज मुंबई का प्रिंसिपल नियुक्त किया गया और 1936 में अंबेडकर ने स्वतंत्र लेबर पार्टी की स्थापना की और 1937 में विधानसभा के लिए मुंबई से चुनाव लड़ा. यहीं से उनका राजनीतिक सफर शुरू हुआ उन्होंने ब्रिटिश हुकूमत से देश की आजादी के लिए स्वतंत्रता आंदोलनों में भी बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया.

-1936 में एनीहिलेशन ऑफ कास्ट नामक पुस्तक प्रकाशित की जिस में जाति व्यवस्था और हिंदू रूढ़िवादी धार्मिक नेताओं के खिलाफ भी की.

- अगस्त 1947 को भारत की स्वतंत्रता के बाद नई कांग्रेस के नेतृत्व वाली सरकार ने पहले कानून और न्याय मंत्री के रूप में सेवा करने के लिए आमंत्रित किया.इस दौरान उन्होंने भारत का संविधान लिखा और महिला और पुरुषों को समाज में समानता का अधिकार दिया.

-1950 में उन्होंने मे लगभग पांच लाख दलित अनुयायियों के साथ बौद्ध धर्म अपना लिया.

“पानी की एक बूंद जो समुद्र में मिल जाने के बाद अपना अस्तित्व खो देती है लेकिन मनुष्य को समाज में रहकर अपना अस्तित्व नहीं खोना चाहिए. क्योंकि व्यक्ति स्वतंत्र है और उसका जन्म समाज के विकास के लिए नहीं, अपितु स्वयं के विकास के लिए हुआ है.“

जी हां बच्चों इन विचारों से भारतीयों के मन में चेतना जगाने वाले और कोई नहीं हमारे संविधान निर्माता डॉक्टर भीमराव अंबेडकर जी हैं वह एक सफल राजनीतिज्ञ विधिवेत्ता समाज सुधारक और अर्थशास्त्री थे डॉक्टर भीमराव अंबेडकर जी ने जाति धर्म से अधिक कर्म को महत्व दिया और जीवन के हर क्षेत्र में सफलता हासिल की इसलिए वह आज हमारे प्रेरणा स्रोत हैं.

*****

राष्ट्रीय जलीय जीव डाल्फिन

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र

भारत का राष्ट्रीय जल जीव
गंगा डाल्फिन हूँ मैं न्यारी.
मछली - सी हूँ किन्तु न मछली
मैं प्यारी हूँ स्तनधारी.

कहलाऊँ 'सन ऑफ रीवर' मैं
जलजीव बड़ा मांसाहारी.
मैं नेत्रहीन पर घ्राणशक्ति
मैं रखती हूँ अतिशय भारी.

पानी में रहती अधिक समय
साँस के लिए भरती उछाल.
लेती हूँ साँस जोर से जब
ध्वनि 'सूँ-सूँ-सोस' देती निकाल.

भूरी - स्लेटी है कड़ी त्वचा,
अथवा हो कभी गुलाबी रंग.
प्रतिध्वनि निर्धारण सूँघ-सूँघ
मेरे शिकार का अजब ढंग.

मानव के साथ मित्रवत ही
मैं चाह रही रखना नाता.
बढ़ रहा प्रदूषण संग शिकार
प्राणों पर संकट बन जाता.

हो सफल 'मिशन क्लीन गंगा'
डाल्फिन तभी बच पाएगी.
निर्मल जलयुक्त बने गंगा
तब सब जीवों को भाएगी.

पाँच अक्टूबर दो हजार नौ को
राष्ट्रीय जल जीव हुई घोषित.
'प्लेटेनिस्टा गेंगटिका' प्रजाति
भारत सरकार से हूँ पोषित.

*****

युगारब्ध

रचनाकार- अशोक कुमार यादव

बीत गया आने वाला साल,
नव युगादि का हो रहा उदय.
शीतल होंगी शशि की किरणें,
भू पर होगा सुकुमार सूर्योदय.

नाच उठेगी शकुन्त डालियों में,
चारों ओर दिखेगा बसंत बहार.
स्वर्ग-सी प्रतीत होगी वसुंधरा,
प्रकृति का है अनुपम उपहार.

कर्म पंथ में आगे बढ़ेंगे मानव,
देश-विदेश में करेंगे व्यापार.
लेखा-जोखा का हिसाब करेंगे,
उन्नति के राहों में बढ़ेगा संसार.

क्या खोया,क्या पाया जीवन में,
लाभ,हानि,पाप और पुण्य यश.
देख रहा है ऊपर वाला मुरलीधर,
मरणोपरांत हिसाब लेगा अपयश.

युगानुयुग में हो चहूंओर सुकून,
रामराज्य समस्त देश बन जाए.
गांधी अहिंसा की नीति रीति हो,
विश्व सोने की चिड़िया कहलाए.

*****

पलाश के फूल

रचनाकार- अशोक कुमार यादव

बसंत ऋतु में खिल गया ब्रह्मावृक्ष,
लाल, सफेद और पीले रंग के फूल.
खेतों के मेढ़ में जंगल की आग जैसे,
अर्धचंद्राकार,छोटा और गहरा झूल.

गगन में उड़ते पंछी देखते किंसुक,
करने को बसेरा डालियों में बैठते हैं.
तिनका-तिनका जोड़ बनाते घोंसला,
थिरक कर जीवन का गीत गाते हैं.

फसल देख रहे हैं अपलक दृष्टि डाले,
युवती स्वरूप बालों में लगाने गजरा.
कब आओगे तुम पास में रक्तपुष्पक,
प्रियवर लालायित देखने को मुजरा.

नववर्ष में रंग भरने आई रंगों की होली,
सुपर्णी कुसुम का अमिट रंग आकर्षित.
सतरंगी रंगों से सजी है जननी वसुंधरा,
सर्वजन सहृदय आनंद, मंगल, हर्षित.

झड़ गए पेड़ों की जीर्ण-शीर्ण पत्तियां,
निरंतर परिवर्तन है संसार का नियम.
फिर चहूंओर आएगी हरियाली बहार,
रखना होगा सबको धीरज और संयम.

*****

निर्णय क्षमता

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी

निर्णय लेना एक ऐसी क्रिया है जो हर व्यक्ति के जीवन में आती ही है. चाहे वह सर्वोच्च शिखर पर बैठा व्यक्ति हो या अंतिम छोर की अंतिम पंक्ति में बैठा सामान्य व्यक्ति हो. निर्णय प्रक्रिया में अपने अपने स्तर पर परिस्थितियों के अनुसार व्यक्तिगत सार्वजनिक, प्रशासनिक, सरकार, पार्टी, राजनीतिक दिशा, चुनाव सहित हर संस्था, संगठन शामिल हैं जिन्हें अनिवार्य रूप से निर्णय प्रक्रिया से दो चार होना पड़ता है.

साथियों बात अगर हम निर्णय की पृष्ठभूमि के लिए उसकी परिभाषा की करे तो अनेक बुद्धिजीवियों ने विस्तार से समझाया है उससे निष्कर्ष निकलता है कि निर्णय लेना रचनात्मक, मानसिक, बौद्धिक, कौशलता का केंद्र बिंदु है जहाँ उपलब्ध विकल्पों या बिना विकल्पों के ज्ञान, विचार, भावना, कल्पना, जनहित में सटीक व सार्वजनिक सर्वोत्तम सिद्ध हो ताकि भविष्य में उसके दूरगामी अनुकूलतम सकारात्मक परिणाम पारदर्शिता से देखे जा सकें. सार्वजनिक निर्णय प्रायः नीति, नियम, आदेश, निर्देश के रूप में व्यक्त होते हैं.

साथियों बात अगर हम व्यक्तिगत जीवन में निर्णय की करें तो हर व्यक्ति के जीवन में अनेक स्थितियों में ऐसा पल आता है जहाँ हमें निर्णय लेना होता है बस! यही निर्णय हमारे जीवन की दिशा तय करता है. थोड़ी सी चूक भी दीर्घकालीन समस्या का कारण बन सकती है इसलिए हमें अपनी निर्णय क्षमता का विकास करना ज़रूरी है. इसके लिए हमें समय के साथ अपडेट रहना ज़रूरी है जिससे किसी भी स्तर पर हमें निर्णय करने में आसानी होगी क्योंकि दीर्घकालीन सफ़लता के लिए समय पर सही निर्णय लेना जरूरी है.

हालांकि हम अनेक अपनों से अनेक बातों पर सलाह मशवरा करते हैं परंतु निर्णय स्वयं लेना समय की मांग है क्योंकि स्वयं पर भरोसा रख भविष्य के बड़े निर्णय लेने के लिए हमें निर्णय क्षमता को विकसित करने को रेखांकित कर निम्न बातों पर ध्यान देना होगा लक्ष्य का निर्धारण, विकल्पों का निर्धारण,समस्या का विश्लेषण और उपलब्ध जानकारी का अध्ययन ,संपूर्ण कारकों की पहचान, नैतिक निर्णय लेने का कौशल, जोखिम व अनिश्चितता का अध्ययन, दूरगामी परिणाम और निर्णय के विषय संबंधी आवधिक घटनाओं का पूर्वानुमान सहित अनेक ऐसे कारक हैं जिस पर नज़र डालकर निर्णय क्षमता में विकास और निर्णय लेने में आसानी को प्राप्त दिया जा सकता है.

साथियों बात अगर हम निर्णय में भावुकता और असहजता की करें तो, हम जो भी काम करते हैं, उसमें हमारी भावनाएँ अहम भूमिका निभाती हैं, इसलिए कोई भी निर्णय लेते वक्त अपनी भावनाओं की अनदेखी न करें. अगर आप बहुत ही ज्यादा भावुक महसूस कर रहे हैं तो उस वक्त कोई भी निर्णय लेने से बचें. अकसर भावनाओं की रौ में बहकर हम गलत निर्णय ले लेते हैं. ऐसा करने से बचें. जब आप भावनात्मक रूप से संतुलित महसूस करें, तभी शांत दिमाग और शांत मन से निर्णय लें. ऐसा करने से आपके फैसलों के गलत साबित होने की आशंका कम हो जाएगी.

साथियों कोई निर्णय लेते वक्त अगर आप उसके बारे में असहज़ महसूस कर रहें हैं तो फिर वह निर्णय नहीं लें. कोई भी निर्णय लेना मानसिक और शारीरिक रूप से थकावट भरा काम होता है. सिर्फ इस वजह से ही आप शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक रूप से थकावट महसूस कर सकते हैं. अगर कोई बात आपको पहले से ही परेशान कर रही है तो बेहतर होगा कि आप खुद को इस कुचक्र में फंसाए ही नहीं. अगर किसी विषय के बारे में असहज महसूस कर रहें हैं तो उस निर्णय को कुछ देर के लिए टाल दें.

साथियों बात अगर हम निर्णय में विकल्पों और नज़रिए विचारों की करें तो, जब आप किसी निर्णय पर पहुँचते हैं, तो आपके दो तरह के विकल्प होने चाहिए. ताकि अगर एक विकल्प सफल न हो सके तो आप दूसरे विकल्प पर विचार कर सके. ऐसा तभी होगा जब आप अपने दिमाग को खुला रखेंगे और हर विचार पर गौर करेंगे. इसके साथ ही स्वयं पर भरोसा करना भी सीखें. अमरीकी अध्ययन के अनुसार निर्णय लेने की क्षमता को तभी विकसित किया जा सकता है, जब व्यक्ति को स्वयं पर भरोसा हो. आप कॉन्फिडेंट रहेंगे तो भविष्य के लिए बड़े निर्णय ले सकते हैं.

अगर आप स्वयं के नज़रिए पर ध्यान देते हैं तो आप न केवल तनाव से बाहर निकल सकते हैं, बल्कि दूसरों के विचारों को भी बदल सकेंगे. दरअसल, जब तक आप स्वयं के नज़रिए पर ध्यान नहीं देंगे तो आप पर हमेशा अन्य लोगों के विचार ही हावी रहेंगे. इस तरह आप यह भी जज नहीं कर पाएंगे कि आपके लिए क्या सही है और क्या गलत.

साथियों बात अगर हम निर्णय और उसमें आने वाली बाधाओं की करें तो, निर्णय लेने की जटिलता तब बढ़ जाती है, जब आपके पास पर्याप्त सूचनाएँ न हो. ऐसे में निर्णय लेने का काम कठिन होगा. इसके अलावा यदि आपके विचारों में स्थिरता नहीं है तो भी किसी तरह के निर्णय पर पहुँचना मुश्किल होगा. वर्किंग के दौरान किसी समस्या पर यदि आप नकारात्मक विचारों से घिर जाते हैं तो ऐसे में निर्णय लेने की क्षमता भी प्रभावित होगी. इसलिए उन फैक्टर्स पर ध्यान दें जो आपके निर्णय लेने की क्षमता को कमजोर बनाते हैं.

साथियों निर्णय लेना आसान काम नहीं होता. फिर चाहे निर्णय छोटा हो या बड़ा. निर्णय लेने की हमारी क्षमता को कई चीजें प्रभावित करती हैं. अनूठी बात यह है कि अकसर हम इस बात से पूरी तरह अनभिज्ञ होते हैं. यह सच है कि हमारा प्रत्येक निर्णय हमारी जिंदगी को एक ही तरह से प्रभावित नहीं करता है, पर इसका मतलब यह भी नहीं है कि हम दैनिक जीवन में लिए जाने वाले छोटे-मोटे निर्णयों को लेकर उदासीन रवैया अपनाना शुरू कर दें. इसलिए अब से फिर चाहे खाने का मेन्यू तय करना हो या फिर नौकरी के लिए दूसरे शहर जाने का फैसला हो, गलत फैसला लेने से बचने के लिए निर्णय लेते वक्त कुछ बातों को जरूर ध्यान में रखें.

अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर उसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि निर्णय क्षमता को विकसित करना सफल जीवन की कुंजी है. जीवन में समय के साथ अपडेट रहने से निर्णय क्षमता विकसित करने में आसानी होती है तथा सफ़ल जीवन के लिए समय पर सही निर्णय लेना ज़रूरी है. स्वयं पर भरोसा रख भविष्य के लिए बड़े निर्णय ले सकते हैं.

*****

बादल

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू"

धरती करे पुकार,जरा पानी बरसाओ.
बादल सुन लो बात,नहीं तुम अब तरसाओ.
तड़पे सारे जीव,कहाँ से प्यास बुझाये.
जल जीवन आधार,नीर बिन सब मर जाये.

सूरज दादा रोज,तेज गरमी फैलाते.
बचता थोड़ा नीर,उठा उसको ले जाते.
सूखा पन संसार, देख लो इसकी हालत.
बरसाओ अब नीर,पड़ी है धरती लालत.

बादल की बौछार, सभी जग आस लगाते.
होता मन बेचैन, नहीं जब नीर बहाते.

ठूँठ पड़े हैं पेड़,जरा हरियाली लाओ.
भर दो इसमें जान,आज तुम इसे बचाओ.

*****

आत्मज्ञान

रचनाकार- अशोक कुमार यादव

शुरू कर रहा हूँ जीवन का पहला अध्याय,
सुख और दुःख का पाठ अब मुझे पढ़ना है.
बार-बार करूंगा अभ्यास एक ही विषय को,
कर्म और ध्यान से लक्ष्य पथ में आगे बढ़ना है.

सूर्योदय से पहले ब्रह्म मुहूर्त प्रातः जागरण,
घोर तिमिर में ज्ञान प्रकाश करेगा उजाला.

बनकर स्वाध्याय विद्यार्थी जप-तप करूंगा,
ऋषि-मुनियों के सदृश्य गिनूंगा विद्या माला.

दुर्बलता और आलस्य ने पहनाया हथकड़ी,
अज्ञान रूपी राक्षस के बंदीगृह में मैं कैद हूँ.

किसी दिन तोड़कर सलाखें भाग जाऊंगा मैं,
अपनी कमजोरी और बीमारी का मैं स्वयं वैद्य हूँ.

मन से हार गया तो कभी जंग जीत ना पाऊंगा,
मुझे अपनी अंतरात्मा को बार-बार जगाना है.
तू जो कर सकता है उसे कोई नहीं कर सकता,
मुर्दों-सा जीवन को फिर से जीवित बनाना है.

अंतिम बार प्रयास करूंगा युद्ध जीतने के लिए,
दुर्गम राहों को सुगम मार्ग बनाकर आगे बढ़ूंगा.
सहस्त्रों चुनौतियों का सामना करना आ गया है,
सफलता मंजिल के सीढ़ियों में धीरे-धीरे चढ़ूंगा.

*****

हुआ विवाह

रचनाकार- टीकेश्वर सिन्हा "गब्दीवाला"

आज जंगल में हुई,
एक विवाह की तैयारी.
मंडप बना आकर्षक,
सजी पत्थरों की अटारी.
चतुरसिंह लोमड़ की,
दुल्हा बनने की बारी.
बिंदु बंदरी बड़ी सुंदर,
दिखती दुल्हन प्यारी.
कुछ जानवर लगे हैं,
पूरे मंडप को सजाने.
कुछ तो बड़े व्यस्त हैं,
अन्य काम निपटाने.
शेर,भालू,हाथी,गैंडा,
बने हुए हैं बाराती.
ऊँट,चीता, गीदड़ जैसे,
शामिल हुए हैं साथी.

हिनू हिरण मस्त मगन,
झूम-झूम नाच रहा है.
खुश होकर शीलू सियार,
हुआ-हुआ गा रहा है.
हुआ विवाह सम्पन्न,
पूरे रस्म रिवाज से.
चतुरसिंह और बिंदु,
हुए पति-पत्नी आज से.

*****

होली के रंग

रचनाकार- डिजेन्द्र कुर्रे "कोहिनूर"

भरा सुर्ख फूलों से,पलासों की ये डाली हैं.
मधुर नग़मे सुनाने को, कोयल भी आज काली हैं.
सभी रंगों में डूबे है, सभी है मस्त मगन में.
ये होली की छटा इस वर्ष,तो सुखसार वाली हैं.

कहीं बालक बड़े बूढ़े,कहीं युवा दीवाने हैं.
सभी के होंठ पर होली के,मधुर तराने हैं.
कोई भी गा ये रंगों से, कोई डूबा गुलालों से.
पता है आज जन जन को,खुशी के गीत गाने हैं.

चली पूर्वा सनन सन सन,सजी है बाग झूलों में.
भरा है पीर विरहन में,तड़पते तीक्ष्ण सुरों में.
मगर फागुन का यह महीना,सभी को रंग लेता है.
धरा भी है सजी अनुपम,लहकते सुर्ख फूलों में.

*****

तपन

रचनाकार- परवीनबेबी दिवाकर "रवि"

छायी मई की तपन,
सब करो अपनी जतन.

प्याज से नाता जोड़ो,
जंक फूड को छोड़ो.

मई में बहे हवा में अंगारे,
रहते हम सब कूलर के सहारे.

घर से निकलते जब जरुरी हो काम,
गमछा, रुमाल से मुँह को बाँध.

शरीर में होती जब थकान,
खरबूजा, तरबूज देता आराम.

*****

एक राजा की कहानी

रचनाकार- बद्री प्रसाद वर्मा अनजान

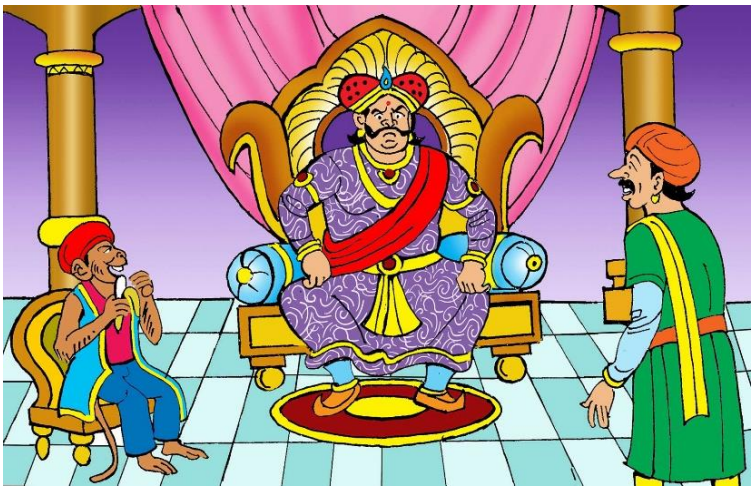

एक बहुत निर्दयी राजा था. उस राज्य की प्रजा राजा के अत्याचारों से बहुत परेशान थी. राज्य में कोई भी यदि राजा की शिकायत करता, राजा की पूजा नहीं करता, राजा का गुणगान नहीं करता, तो उसे राजा सीधे फाँसी की सजा देता था. राजा के अत्याचारों से जनता बेहद परेशान और दुखी थी. एक दिन राजा जंगल में शिकार के लिए गया हुआ था. उसके साथ दो सिपाही भी थे. शिकार की खोज कर रहे राजा के सामने एक शेर आ गया. शेर को देख कर राजा के दोनों सिपाही वहाँ से भाग गए. राजा से शेर बोला आज मैं तुम्हें मार कर खाउँगा. तुम्हारे जैसे अत्याचारी राजा को मैं जिन्दा नही छोड़ सकता. शेर की बात सुनकर राजा बोला, अगर तुम हमारी जान बख्श दोगे तो मैं तुम्हें रोज भोजन के लिए दो बकरे दिया करूँगा.

तुम मुझे झूठा लालच दे रहे हो. मैं तुम्हारी बातों में आने वाला नहीं हूँ ऐसा कह कर शेर ने राजा पर आक्रमण कर दिया और उन्हें जमीन पर गिरा दिया. शेर राजा को मार कर खा गया. राजा के मरने की खबर पाकर राज्य की जनता खुशी से फूली नही समाई.

*****

परीक्षा

रचनाकार- बद्री प्रसाद वर्मा अनजान

मन में नई उमंग
जगाती है परीक्षा.
साल की पढ़ाई का
हिसाब लेती है परीक्षा.

नहीं किसी को डराती है
नहीं धमकाती है परीक्षा.
सब पर अपना प्यार लुटाने
आती है परीक्षा.

सभी प्रश्नों का उत्तर
पूछती है परीक्षा.
सही सही उत्तर दो
सबसे कहती है परीक्षा.

पढ़ने-लिखने की लगन
मन में जगाती है परीक्षा.
सबको प्यार से लिखना पढ़ना
सिखलाती है परीक्षा.

पास फेल का नतीजा
सबको सुनाती है परीक्षा.
फेल होने से डरो मत
समझाती है परीक्षा.

*****

गर्मी

रचनाकार- बद्री प्रसाद वर्मा अनजान

गर्मी आई गर्मी आई
दे गई पसीना.
मुश्किल कर दिया
मच्छरों ने जीना.

रात रात भर
बदन में सुई चुभाते.
पी कर खून
खूब मुस्काते.

सूरज बन कर
आग का गोला.
देखो लगता
कितना भोला.

गर्मी ने आफत वो ढाई
दिन में आती खूब जंभाई.
घर से बाहर निकलो तो
आ जाती आफत भाई.

*****

बंदर मामा

रचनाकार- बद्री प्रसाद वर्मा अनजान

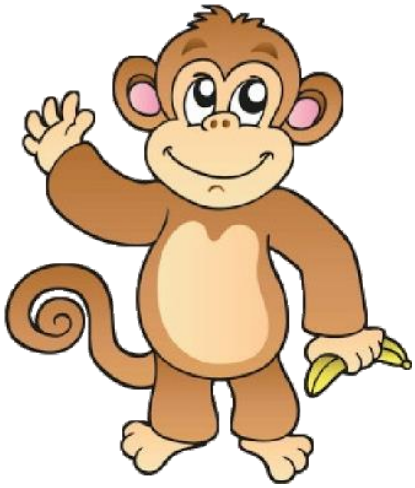

एम बी बी एस पढ़ कर बंदर मामा
बन गए डाक्टर भाई.
खोलकर अस्पताल अपना
इलाज करने लगा भाई.

जंगल में छा गई
चारो तरफ खुशहाली.
सभी जानवर खुश हो कर
बजाने लगे ताली.

बंदर मामा का अस्पताल
हो गया खूब मशहूर.
अस्पताल की चर्चा
होने लगी दूर दूर.

जो भी रोगी आते
ठीक हो कर जाते.
अस्पताल में सारी सुविधा
हर रोगी हैं पाते.

*****

आम

रचनाकार- बद्री प्रसाद वर्मा अनजान

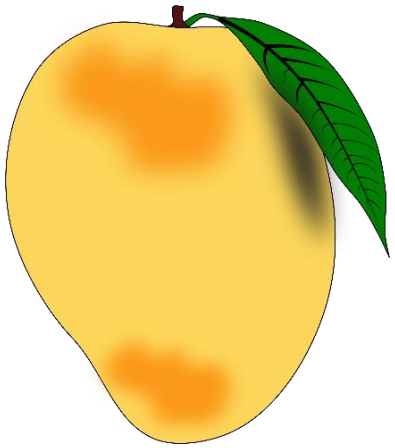

पेड़ो पर देखो कैसे
लटक रहे हैं आम.
पक्षी और गिलहरी
कुतर कर खा रहे हैं आम.

कुछ देर में बच्चों की
टोली बाग में आई.
सबने तोड़ तोड़ कर
पका आम खूब खाया.

तभी बाग का मालिक
डंडा ले कर आया.
बच्चों को मारने को
जोर से डंडा घुमाया.

सारे बच्चे भाग गए
कोई पकड़ न आया.
बच्चों को आम खाने में
मजा खूब आया.

*****

घाम पियास के दिन आगे

रचनाकार- प्रीतम कुमार साहू

लकलक लकलक घाम करत हे,
घाम पियास म मनखे मरत हे.
काटें काबर रुख राई ल संगी,
ताते तात आज हवा चलत हे.

बर पिपर के छईयां नंदागे,
बिन छईयां के चिरई भगागे.
आगी अंगरा कस भुइयां लागे,
भोंमरा जरई म गोड़ भुंजागे.

रुख राई के लगईया भगागे,
डारा पाना सबो हवा म उड़ागे.
घाम पियास ले सबला बचइया,
हरियर धरती घाम म सुखागे.

जंगल झाड़ी रुख राई कटागे,

तरिया डबरी के पानी अटागे.

खेत खार हर सबो दर्रा हनगे,

पानी बिना रुख राई मरगे.

*****

कैसे दूँ बधाई

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू"

साल जन्म दिन आये जब भी, यादें बहुत सताती है.
चित्र देख कर पापा मेरी, आँखे नम हो जाती है.

विद्यालय से वापस आते, राह ताँकती रहती थी.
जल्दी आओ पापा मेरे, फोन लगा कर कहती थी.
कहाँ गया अब वो सारा दिन, यादें बहुत रुलाती है.
चित्र देख कर पापा मेरी, आँखे नम हो जाती है.

केक सजा कर रखती थी मैं, मिलकर जन्मदिन मनायेंगे.
हाथ पकड़ कर काटेंगे हम, खुशियाँ भी फैलायेंगे.
हँसने की आवाज आपकी, सुनने को तरसाती है.
चित्र देख कर पापा मेरी, आँखे नम हो जाती है.

मिला प्यार जितना तुम से भी, दिल में मैं संजोती हूँ.
नयन बन्द कर मैं भी पापा, सपनों में भी रोती हूँ.

साथ रहे जब बेटी पापा, घर में खुशियाँ लाती है.
चित्र देख कर पापा मेरी, आँखे नम हो जाती है.

जन्म बधाई कैसे दूँ मैं, बैठे सोंचा करती हूँ.
नहीं दिखाई दे सकती फिर भी, मन में आँहे भरती हूँ.
जब-जब कविता लिखती हूँ मैं, याद तुम्ही को करती हूं.
चित्र देख कर पापा मेरी, आँखे नम हो जाती है.

*****

प्रेम का अतिरेक

रचनाकार- तुषार शर्मा "नादान"

प्रेम का अतिरेक,
जीवन भर सालता है.
बनता प्रगति में रोड़ा,
अज्ञात भय पालता है.
मात पिता का लाड़,
संतान के लिए बाधा.
दैहिक विकास दे पूरा,
सकल उन्नति आधा.
बच्चा मन से, पंगु हो जाता,
रहे अधिक जब गोद में.
दुनिया के फेर, समझ न पाता,
अधिक रखो गर मोद में.
प्रियतम प्रेम करे जो ज्यादा,
ध्यान समय का, न रह पाता.
काम ज़रूरी छूटते सारे,
लक्ष्य पानी में, है बह जाता.

गुरू शिष्य से,यदि रखेगा,
आशा से अधिक लगाव.
सोना कुंदन बनेगा कैसे?
अग्नि से मिले न ताव!!
प्रेम करो पर उतना ही,
जीवन बगिया जो सींचे.
उद्देश्यपरक सन्मार्ग दिखाए,
गतिमान पैर न खींचे.

*****

शिक्षा है वरदान

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र

स्कूल चलो' छेड़ें अभियान.
शिक्षा पाना है वरदान.

केंद्र ज्ञान का है विद्यालय
जीवन बन जाता सुख - आलय
प्रतिदिन उत्सव जैसा मानें
सभ्य बनेंगे, मन में ठानें

गिनती और पहाड़े रोचक
क, ख, ग, घ मंत्र समान.

हिंदी, गणित, कला, विज्ञान
सारे विषय ज्ञान की खान
खेल-कूद से स्वास्थ्य बनाएँ
हँसी - खुशी से पढ़ने जाएँ

प्रतिदिन समय से शाला जाना
गुरु की सीख हृदय से मान.

जो बच्चे स्कूल न जाते
वे अच्छे संस्कार न पाते
उनको पड़ता है पछताना
अनपढ़ का दुख पड़े उठाना

विद्या धन होता अमूल्य है
आदर पाता है विद्वान.

*****

नंदन वन में चुनाव

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र

नंदन वन में फिर चुनाव का
मचा जोर का शोर.
बंदर मामा लगे उछलने
लगा झूमने मोर.

काँव-काँव कर कौआ काका
करने लगे प्रचार.
हुवा-हुवा स्वर में सियार ने
बोली जय-जयकार.

साँप-नेवला एक हो गए
भालू-हाथी साथ.
दलबदलू लोमड़ ने मृग से
मिला लिया झट हाथ.

भोजन, न्याय, सुरक्षा मुद्दे
थे चुनाव में छाए.
राजा शेरसिंह ही होंगे
बहुमत साफ बताए.

ताकतवर हो अपना नेता
सही सुरक्षा देगा.
सभी वन्य-पशु निर्भय होंगे
शत्रु न टक्कर लेगा.

सभी स्वार्थी, अवसरवादी
हार गए बेचारे.
स्वप्न सजाने वाले दिन में
देख रहे थे तारे.

*****

बिटिया

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र

अंजू बिटिया बहुत सयानी.
बातों की बनती है नानी.

थोड़ा - थोड़ा तुतलाती है
इतराती है, इठलाती है

डांटो तो वह गाल फुलाती
बंद न करती कारस्तानी.

पल - पल में वह रूठा करती
फल माँगो तो जूठा करती

मोबाइल को हाथ में लेकर
फोटो खींच रही मनमानी.

गुब्बारे हैं उसको प्यारे
लेती रंगबिरंगे सारे

अपनी गलती कभी न मानी
गढ़ लेती है नई कहानी.

सीढ़ी चढ़ती और उतरती
आँगन में नन्हें पग धरती

कुछ कह तो रोने लगती
करना है पसंद शैतानी.
अंजू बिटिया बहुत सयानी.

*****

आग और पानी

रचनाकार- बद्री प्रसाद वर्मा अनजान

एक रोज आग और पानी में कौन बड़ा है कौन छोटा है इस बात को लेकर झगड़ा शुरू हो गया. आग बहुत घमंडी था वह अपने को सबसे बड़ा कहता था. वही पानी अपने को न बड़ा कह रही थी न छोटा. वह तो आग से दूर ही रहना चाहती थी. मगर आग पानी से हार मनवाने पर तुला हुआ था. आग बोला अरे ओ पानी तू नहीं जानती मैं अपनी गर्मी से तुम्हें पल भर में सोख लूंगा. मेरे आगे तेरी क्या औकात है. आग की हठधर्मीता देख कर पानी बोल पड़ी तू अपने आप को क्या समझता है. मैं चाहूँ तो तेरा अस्तित्व ही मिटा कर रख दूंगी. मुझसे बेकार में मुंह मत लग. इतना सुन आग गुस्से में बोल पड़ा कल इसका फैसला हो कर रहेगा. मैं देखूंगा मेरा अस्तिव तू कैसे मिटाती है. इतना कह कर आग वापस लौट गया.आग के जाते ही पानी सारे नदियों और समुद्रों को बुला कर कहने लगी" आग को अपने आप पर बहुत घमंड़ हो गया है. वह हमें धमकी दे कर गया है कि मैं कल तेरा अस्तित्व मिटा कर रहूँगा. अगर हम सब एक नहीं हुए तो आग सचमुच हमारा अस्तित्व समाप्त कर देगा." पानी की बात सुनकर सारी नदियां और समुद्र एक साथ बोल पड़े हम आग से निपट लेंगे. इसमें घबड़ाने की कोई जरूरत नहीं है. कल हम सब मिल कर उस घमंड़ी आग का घमंड़ तोड़ कर रहेंगे.

अगले दिन आग अपना विशाल रूप बना कर छोटे ताल पोखरों नदी नालों को अपनी गर्मी से सोखता आगे बढ़ता चला जा रहा था. वह बडी नदियों समुद्रों को ललकार कर कह रहा था कि अगर किसी में हमसे मुकाबला करने की हिम्मत हो तो सामने आ जाए. इतना सुनते ही सारे समुद्र और नदियां आग को चारो तरफ से घेर कर उस पर भारी जल फेकने लगे. बादलों ने भी आग पर मुसलाधार पानी बरसाना शुरू कर दिया. आग पानी की शक्ति को देख कर घबड़ा गया. वह सोच में पड़ गया. पानी सचमुच हमारे

अस्तित्व को मिटा कर रख देंगी. हमें पानी से माफी मांग लेनी चाहिए. तभी हमारी जान बच पाएगी वर्ना नहीं. पानी आग से बोल पड़ी आगे बढो रूक क्यों गए? मैं अब आगे नहीं बढ़ सकता हूँ मैं अपनी गलती की सभी से माफी मांगता हूँ. मुझे छोड़ दीजिए वर्ना मेरा सचमुच अस्तित्व मिट जाएगा. आग की बात सुनकर समुद्र और नदियां हंसते हुए बोल पड़े तुम्हें तुम्हारी शक्ति की थाह लग गई. हम तुम्हें माफ करते है. पर भविष्य में हमसे टकराने की कभी कोशिश मत करना समझे. समुद्र के कहने पर बादलों ने पानी बरसाना बन्द कर दिया और नदियों के साथ स्वयं समुद्र वापस लौट गया. कहते हैं तभी से आग पानी की ये बड़े-छोटे की लड़ाई समाप्त हो गई.

*****

ब्रम्हगुप्त

रचनाकार- आशा उमेश पान्डेय

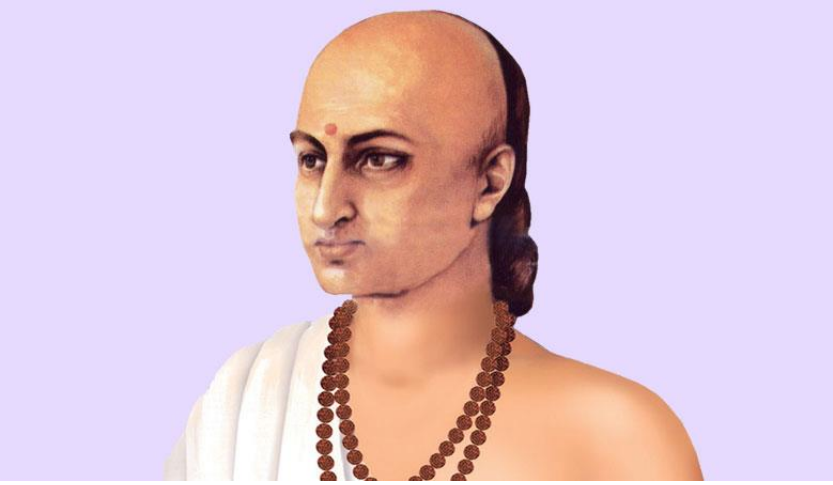

भारत के लाल ब्रह्म गुप्त जी,
राजस्थान के भीनमाल में जन्म लिए.
प्रसिद्ध भारतीय गणितज्ञ,
ज्योतिषाचार्य कहलाएं.

तरह-तरह के खोजों से,
दुनिया में परचम लहराए.
ज्योतिष विद्या के महारथी
आचार्य भिल्लमाला कहलाए.

महाकाल की नगरी उज्जैन में
अंतरिक्ष प्रयोगशाला प्रमुख रहे.
इसी दौरान ब्रह्मस्फूट,खण्डखाधक,
नामक दो प्रसिद्ध महान ग्रंथ रचे.

प्रसिद्ध वेधकर्ता बनकर आपने,
वेधों के अनुरूप भगणों की,
कल्पना को साकार किया.

ब्रह्म सूत्र प्रमुख लेख देकर ,
चक्रीय चतुर्भुज के क्षेत्रफल में,
आप ने विशेष योगदान दिया.

शून्य,आधुनिक संख्या पद्धति,
ब्रम्हसूत्र,ब्रह्मगुप्त प्रमेय,
आपकी अद्भुत उपलब्धियों ने,
भारत के सपनों को साकार किया.

ऐसे भारत के महान लाल को,
हम शत शत करते है.

*****

बाल पहेलियाँ

रचनाकार- कमलेंद्र कुमार श्रीवास्तव

1. मैं हूँ मंदिर एक निराला
लोग कहे मुझे सोने वाला.
अमृतसर है मेरा धाम,
झटपट बोलो मेरा नाम.

2. इक मेला मैं अजब निराला,
नदी किनारे लगने वाला.
बारह वर्ष मैं आऊँ
बोलो बच्चों क्या कहलाऊँ ?

3. बच्चे बूढ़े और जवान,
मैं रखता हूँ सबका ध्यान.
आवाज सुनाऊं चित्र दिखाऊँ
मैं बिजली से चलता जाऊँ.

4. खट्टामीठा स्वाद है मेरा-,
कभी हरा तो कभी हूँ लाल.
दो अक्षर से बनता हूँ मैं,
फल हूँ छोटा करूँ कमाल.

उत्तर -1. स्वर्ण मंदिर, 2. कुम्भ मेला, 3. टेलीविजन, 4. बेर

*****

गर्मी दीदी

रचनाकार- अशोक 'आनन'

गर्मी दीदी, गर्मी दीदी.
हालत ख़स्ता कर दी दीदी.

चढ़ा धूप का पारा नभ पर
लाओ,धरा पर जल्दी दीदी.

गर्म हवाएं पिन-सी चुभतीं
यही आप से अर्ज़ी दीदी.

किरणें ऐसे चुभतीं, जैसे
गर्म सलाखें रख दीं दीदी.

नहाते,लेकिन लगता ऐसे
आग बदन पे धर दी दीदी.

हमसे मार सही नहीं जाती
मौसम इतना बेदर्दी दीदी.

*****

दुम

रचनाकार- अशोक 'आनन'

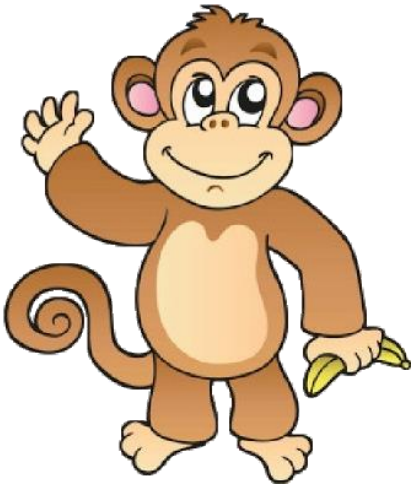

अपनी भी ग़र होती दुम.
बंदर जैसी करते धूम.

उसे पकड़कर बनते रेल.
उसके भी कई होते खेल.

जब भी कोई ग़लती करते.
कान नहीं, सब दुम पकड़ते.

जिसकी होती लम्बी दुम.
उसके यहां सब गाते गुण.

दुम तानकर जब भी चलते.
दुम कटे ये हमसे जलते.

*****

गाँव

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु"

सुघ्घर मोर हे गंवई-गाँव
जिहाँ बर-पीपर के छाँव.
जेखर लम्बा-लम्बा थॉव
जेमा कौउआ के काँव.

सुग्घर गाँव के घर-दुवार
जेखर महिमा हे अपार.
जेमा पान-पताई के डार
खदर छानी हे छाँवदार.

जिहाँ हावे चउक-चौपाल
जेमा खेलय ग्वाल-बाल
जेमा बइठे गाँव के सियान
जेमन बाँटय सुग्घर ग्यान

सुघ्घर अंगना हे घ- दुवार
जेमा लहलहाए तुलसी डार.
दाई पूजा करे दिया बार
जेखर महिमा हावे अपरंपार.

*****

आम

रचनाकार- अशोक 'आनन'

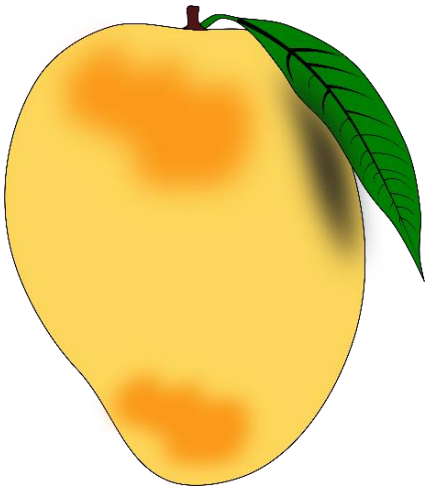

मधुमास में फूले आम.
फूलों का है मंजरी नाम.

झड़कर मंजरी, आती केरी.
खाने में न करते देरी.

पककर, रंग हो जाता पीला.
फलों का राजा आम रसीला.

चूस- चूसकर जिनको खाते.
खाकर भी, न कभी अघाते.

खाने को मन हरदम चाहे.
मौसम इनका कभी न जाए.

रोज़ मिले ग़र खाने आम.
टॉफी का फिर लें क्यों नाम.

चूसें, जब जी चाहे हमारा.
गर्मी, बारिश या हो जाड़ा.

*****

ऊंट जी

रचनाकार- अशोक 'आनन'

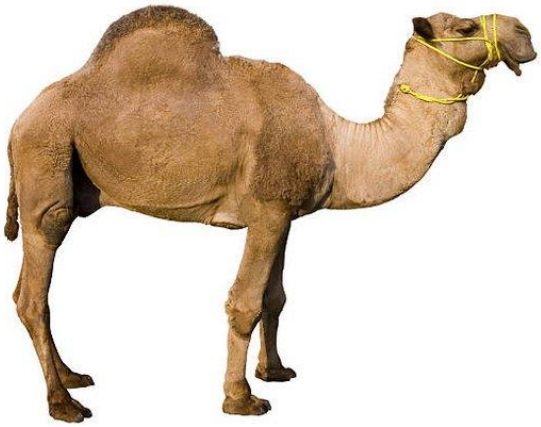

ऊँचे- ऊँचे ऊंट जी.
लगते हमको ठूंठ जी.

जलते, लेकिन पांव में
नहीं पहनते बूट जी.

पानी का है पेट में
मानों इनके कूप जी.

बोझा ढोते, चाहे हो
बारिश, सर्दी, धूप जी.

कभी न देखें दर्पण में
ये तो अपना रूप जी.

*****

परिवार

रचनाकार- लोकेश्वरी कश्यप

सुख दुख में जो सदा साथ निभाता.
बने हमारा संबल सदा हौसला बढ़ाता.
धर्म-कर्म, संस्कार जो हमें सिखाता.
परिवार समाज की नींव बनाता.

हमें रिश्तो की मर्यादा सिखाता.
पोषित करता हमको सक्षम बनाता.
नेकी -बदी में फर्क हमें समझाता.
परिवार समाज की नींव बनाता.

देकर हमें अस्तित्व धरा पर लाता.
सुरक्षा देता खतरों से हमें बचाता.
प्रेम, त्याग, एकता,समर्पण सिखाता.
परिवार समाज की नींव बनाता.

धीरज धर दुख को बांटना सिखाता.
सुख में सब के साथ हंसता गाता.
यहां पिता का दुलार मां की ममता.
परिवार समाज की नींव बनाता.

कहीं छोटा तो कहीं बड़ा होता.
सुख दुख में सदा साथ खड़ा रहता.
इसका साथ छोड़ना पड़ेगा महंगा.
परिवार समाज की नींव बनाता.

*****

नया दोस्त

रचनाकार- टीकेश्वर सिन्हा "गब्दीवाला"

"मम्मी ! कुछ खाने के लिए है तो दो ना. बहुत भूख लगी है." टेबल पर अपनी बैग रख कर शर्ट का बटन खोलते हुए मयूरेश बोला.

"ठीक है बाबा. थोड़ा शांत रहो. कुछ तो नहीं है अभी,पर देखती हूँ मूंगदाल होगी तो हलवा बना देती हूँ. जाओ पहले हाथ-मुँह धो लो." प्रिया बोली; और किचन में डिब्बों को खोल-खोल कर देखने लगी.

मयूरेश हाथ मुँह धो कर आया. उसे लगा कि मम्मी कुछ न कुछ तो खाने का इंतजाम कर रही है. फिर वह ड्राइंग रूम में गया. रिमोट पकड़कर टीवी के सामने बैठ गया. टीवी तो देख रहा था, पर उसका ध्यान किचन की ओर था.

"मयूर ! लो बेटा खा लो पहले. फिर देखना अपना कार्टून प्रोग्राम." मम्मी ने एक प्लेट हलवा व एक गिलास पानी मयूरेश के सामने टेबल पर रखा. पेट भर हलवा खा कर मयूरेश डकारते हुए खेलने के लिए बाहर निकला.

दिखने में गोल-मटोल था मयूरेश. इस वर्ष सातवी कक्षा में था. वह पढ़ाई-लिखाई में बहुत अच्छा था पर शरारती भी बहुत था, कब उसके दिमाग में क्या शरारत सूझ जाऐ कोई नहीं जानता. आज उसका मन अपने दोस्त उमंग के घर जाने को हो रहा था. तभी उसे एक बूढ़ा व्यक्ति आते हुए दिखाई दिया. वह बूढ़ा व्यक्ति अपने बेटे के घर पहली बार आ रहा था. उसने घर देखा नहीं था. रास्ते में खड़े मयूरेश से पूछ बैठा- "बेटा, सुधीर ठाकुर का घर कहाँ पर है. किराए से वह रहता है. उसने इसी मुहल्ले का नाम

बताया है. लगभग साल भर हुआ उसे शिफ्ट हुए. उसका एक बेटा है गुड्डा. तुम्हारी उम्र का होगा. बूढ़े व्यक्ति की बात सुन मयूरेश तपाक से बोला- "दादा जी, यहाँ पर सुधीर ठाकुर नाम का कोई नहीं रहता. गुड्डा-सुड्डा भी नहीं रहता."

"ठीक है बेटा." कहते हुए बूढ़ा व्यक्ति आगे बढ़ने लगा, तभी मयूरेश के दिमाग में एक शरारत सूझी. बोला- "हाँ...हाँ... रुको...रुको... दादा जी! सुधीर ठाकुर का मकान यहाँ से एक फर्लांग की दूरी पर है. इधर से जाओ, नजदीक पड़ेगा." मुस्कुराते हुए मयूरेश वहाँ से रफू चक्कर हो गया. बूढ़ा व्यक्ति मयूरेश के बताये रास्ते पर चलने लगा. रास्ता बहुत ही खराब था. दो-तीन फर्लांग दूरी उसने तय कर लिया. उसे सुधीर के मकान का पता नहीं चला. दिन भी डूबने लगा था. बूढ़ा व्यक्ति भटक गया. चलते-चलते वह अचानक एक गड्ढे में गिर गया. उसकी चीख सुन कर दो-चार लोग दौड़कर आये. सावधानीपूर्वक उसे गड्ढे से निकाला. लोगों के पूछने पर बुढ़े व्यक्ति ने अपने बेटे का जिक्र किया, तो कुछ लोग जान गये उसके बेटे सुधीर ठाकुर को. फिर उसे सुधीर ठाकुर के घर ले जाया गया.

आज सुबह स्कूल लगा था. मयूरेश और उमंग छुट्टी के बाद स्कूल से घर आ रहे थे. रास्ते में ही उमंग का घर मयूरेश के घर से पहले था; तभी उमंग ने मयूरेश से कहा- "चलो पहले हमारे घर फिर जाना अपने घर."

"चलो ठीक है." कहते हुए मयूरेश उमंग के घर चला गया. बैठक कमरे में स्टूल पर अपनी बैग रख कर सोफे पर बैठा. तभी उसे कराहती हुई भी आवाज सुनाई दी- "बहू ! अंजली ! गुड्डा किधर से आ गया. सुधीर तो इसे लेने गया है ना ?"

"गुड्डा" और "सुधीर" नाम सुनकर मयूरेश चौंक गया. उसने उमंग को आवाज लगाई. उमंग कमरे में आया. मयूरेश ने पूछा- "गुड्डा और सुधीर किसका नाम है तुम्हारे घर ? उमंग बोला- " मैं हूँ गुड्डा. दादाजी अकेले ही मुझे प्यार से गुड्डा बोलते हैं. और कोई नहीं बोलता. मेरे पापा जी हैं सुधीर सिंह ठाकुर; एस. एस. ठाकुर." उमंग की बात सुन कर मयूरेश डर सा गया.

फिर उमंग मयूरेश को लेकर अपने दादाजी के कमरे में ले गया. परिचय कराते हुए उमंग बोला- "दादा जी, यह मेरा दोस्त मयूरेश है; और मयूरेश, यह मेरे दादाजी हैं. पिछले शनिवार को आये हैं. किसी शरारती लड़के ने मेरे दादाजी को गलत रास्ता बता दिया. रास्ता भटक गये; गिर गये और इन्हें चोट लग गयी. तभी उमंग के दादा जी व मयूरेश ने एक दूसरे को देखा और पहचान भी लिया. दोनों को पिछले शनिवार की पूरी घटना याद आ गयी. दादाजी सब समझ गये. पर उसने कुछ नहीं कहा. मयूरेश को बड़ा पश्चाताप हुआ, दुख हुआ. अपनी शरारत पर उसकी आँखें डबडबाने लगी. उसके मुख से क्षमा याचना

के शब्द झरने लगे- "दादा जी ! मुझे माफ करना. मैंने बहुत बड़ी गलती की." दादा जी बोले- "कोई बात नहीं बेटा. मैंने तुम्हें माफ किया. पर ध्यान रखना, जीवन में किसी के साथ ऐसी शरारत कभी मत करना." अपने पास बुलाते हुए दादाजी मयूरेश से कहने लगे- "तुम बहुत अच्छे लड़के हो. मेरे गुड्डा के दोस्त हो मतलब मेरे भी दोस्त हुऐ. दोस्तों में शरारत होनी चाहिए ना. चलो मुस्कुराओ." मयूरेश और दादा जी की बातें उमंग व उनके मम्मी-पापा को समझ आ गयी. मयूरेश व उमंग दादाजी के अगल-बगल बैठ गये.

उन तीनों को देख सुधीर ने अंजलि से कहा- "उमंग की मम्मी ! इन तीनों दोस्तों के लिए चाय-बिस्किट की व्यवस्था करो. मयूरेश और उमंग को आज एक नया दोस्त मिल गया." सुधीर की बातें सुनकर सबकी हँसी छूट गयी.

*****

गिलहरी

रचनाकार- नरेन्द्र सिंह नीहार

घर के आसपास मंडराती,
एक गिलहरी रोज.
दानें खाती नाच दिखाती,
दिन भर करती मौज.

छत पर जाकर चिंटू - पिंटू,
करते उससे मेल.
अपने हाथ खिलाते बिस्किट,
देखें उसके खेल.

दो पंजों पर उछले - कूदे,
खूब हिलाती पूँछ.
थोड़ी आहट के होते ही,
झटपट करती कूँच.

धौली काली धारी वाली,
नरम मुलायम बाल.
किट-किट दांत बजाकर बोले-
खेलो करो धमाल.

*****

नारी

रचनाकार- कुमारी गुड़िया गौतम

घुट-घुट कर जीना छोड़ दे तू,
रूख हवा का अब मोड़ दे तू,
आंसु बहाना अब छोड़ दे तू,
हासिल कर एक नया मुकाम,
पत्थर भी फूल बन जायेंगे,
कोशिश करना सीख ले तू.

घुट-घुट कर जीना छोड़ दें तू,
रुख हवा का अब मोड़ दे तू,
अपने आपको आग मे झोंक दें तू,
जीवन की भागदौड़ से न हार मान तू,
संकट आए तो नई राह बना तू,
दर्द मिले तो मुस्कराना सीख लें तू,
स्वाभिमान से जीना सीख ले तू,
चिड़ियों की भांति चहकना सीख ले तू.

घुट-घुट कर जीना छोड़ दें तू,
रूख हवा का अब मोड़ दे तू,
पिंजरे में रहना अब छोड़ दें तू,
आसमां में उडना सीख ले तू,
एक नया अब इतिहास बना तू,
कामयाबी के निशान छोड़ दें तू,
चल अपने रास्ते अब खुद बना तू,
अब तो शिक्षा से वंचित न रह तू.

घुट-घुट कर जीना छोड़ दें तू,
रुख हवा का अब, मोड़ दे तू,
उमंगों की लहरों पे भर ऊंची उड़ान,
किसी के रोके न रुक अब तू,
किस्मत की लकीरें खुद बना तू,
इक दिन ये जहां भी तेरा होगा,
अपनी पहचान बनाना सीख ले तू,
संकटो से जुझना अब सीख ले तू.

घुट-घुट कर जीना छोड़ दें तू,
रुख हवा का अब मोड़ दे तू,
अग्नि परीक्षा देना छोड़ दें तू,
आत्मसम्मान से जीना सीख ले तू,
ख़ुद के लिए भी जीना सीख ले तू,
ये जीवन है इससे हार न मान तू,
आशा की एक नई किरण बना तू,
घुट-घुट कर जीना छोड़ दे तू,
रूख हवा का अब मोड़ दे तू.

*****

100 दिवसीय पठन एवं गणितीय कौशल विकास अभियान

रचनाकार- महेन्द्र साहू "खलारीवाला"

100 दिवसीय अभियान में,
भाषा पठन व गणित सिखाना है.
जो बच्चे दक्षता हासिल कर ले
नाम के आगे टिक लगाना है.

बच्चों का स्तर जानने,बनायें
विद्यार्थी विकास सूचकांक.
कौन,किस स्तर पर है, और
कौन कितने पाए प्राप्तांक.

प्रत्येक बच्चे सीख जाएँ
निर्धारित सभी दक्षताएँ.
हमारे सभी शिक्षकों से
है, बस यही अपेक्षाएँ.

100 दिवसीय अभियान को
बाँट दिये 14 हिस्सों में.

बच्चे रुचिपूर्ण हावभाव पढ़ने लगे
जोड़,घटाव,कविता,कहानी,किस्सों में.

यदि हमें लगे कि बच्चे का स्तर
है बहुत ही कमजोर.
पिछले स्तर की गतिविधियों पर
अभ्यास करें पुरजोर.

बच्चे बड़े ही मजे से
कबाड़ से जुगाड़ लगाते.
विविध मॉडल बनाते
अच्छी शिक्षा संस्कार पाते.

बच्चे हावभाव के साथ
गीत कविता का करें वाचन.
खेल-खेल में नन्हें बच्चे सीखें
गुणा,भाग,वजन,लम्बाई मापन.

100 दिवसीय अभियान का है
बहुत ही सुंदर किस्सा.
रूबरू होने पालक समुदाय भी
लेते बढ़ चढ़ हिस्सा.

बच्चे सामूहिक रूप से पाते
शाला स्तर पर ज्ञान.
शिक्षकों के श्रम और बच्चों की सहभागिता से.
हुआ सफल 100 दिवसीय अभियान.

*****

अष्टभुजी देवी

रचनाकार- योगेश्वरी तंबोली

छत्तीसगढ़ के सक्ती जिले में नगर पंचायत अड़भार में अष्टभुजी देवी का मंदिर स्थित है.

अष्ट द्वारों से युक्त इस नगरी में अष्टद्वार थे जिसे अब अड़भार कहा जाता है.

इतिहासकारों के अनुसार यहाँ छः आगर छः कोरी (126) तालाब थे मान्यता है कि इतने ही देवी देवता यहाँ विराजते हैं यहाँ स्थापित माँ अष्टभुजी की प्रतिमा पाँचवी शताब्दी में निर्मित है. जानकारों का कहना है कि जहाँ माँ अष्टभुजी की मूर्ति है वहाँ एक किला था जो अपूर्ण रह गया. अब पुरातत्व विभाग ने इसे संरक्षित कर लिया है. इसे धरोहर के रूप में सहेज कर रखा गया है हर नवरात्र पर यहाँ भक्तों की भीड़ लगती है. अष्टभुजी माँ की मूर्ति दक्षिणमुखी होने के कारण दूरदराज के लोग यहाँ दर्शन के लिए आते हैं. कोलकाता की देवी के अलावा यहाँ की देवी ही अष्टभुजी एवं दक्षिण मुखी है. मंदिर परिसर में देवी की प्रतिमा के अलावा अन्य कई मूर्तियाँ स्थापित हैं. लगभग 1500 साल पुरानी होने के कारण वर्तमान में सभी मूर्तियाँ खंडित एवं जर्जर स्थिति में हैं.

मंदिर का निर्माण काल विद्वानों ने पाँचवीं शताब्दी बताया है. अष्टभुजी मंदिर इमली के पेड़ के नीचे है जहाँ पर बारह माह हरियाली छाई रहती है. मान्यता के अनुसार यह मंदिर रात में बनाया गया था, दिन निकल आने के कारण यह पूरा नहीं हो पाया जिसके कारण सभी द्वार अपूर्ण हैं. पहले यहाँ आठ द्वार हुआ करते थे जिससे इस नगर का नाम अष्टद्वार था अपभ्रंश होकर कालांतर में अड़भार पड़ गया गाँव की सभी दिशाओं में 8 किले हुआ करते थे. अष्टभुजी मंदिर परिसर में कई बड़े-बड़े पत्थर हैं जिनपर लिपि उकेरी गई है और आकर्षक कलाकृतियाँ भी बनाई गई हैं.

नागरिकों के अनुसार अड़भार में 126 तालाब व पोखर थे इसे तालाबों की नगरी कहा जाता था. वर्तमान में तालाबों को पाट दिया गया है. लोग यहाँ अपनी मन्नत लेकर आते हैं कहा जाता है कि मां अष्टभुजी सबकी मन्नत पूरी करती हैं.

कुछ समय पहले अष्टभुजी मंदिर का सुधार करने की कोशिश भी की गई लेकिन वहाँ के लोगों का मानना है कि माँ अष्टभुजी नहीं चाहती कि मंदिर को तोड़कर नया मंदिर बनाया जाए.इसलिए जैसा मंदिर बना था वैसा ही वर्तमान में भी देखने को मिलता है. यह मंदिर पुरातत्व विभाग के संरक्षण में होने के कारण इस पर मरम्मत कार्य नहीं किया जा सकता हैं. माँ अष्टभुजी अपने भक्तों पर अपनी कृपा बनाए रखती हैं. वैसे तो प्रतिदिन लोगों का आना जाना यहाँ रहता है लेकिन चैत्र नवरात्र एवं क्वांर नवरात्र में यहां भक्तों की भीड़ लगी रहती है. लोग दूर-दूर से दर्शन के लिए आते हैं.

*****

अँगना म शिक्षा

रचनाकार- महेन्द्र साहू "खलारीवाला"

बच्चों की किलकारी संग,
होती घर "अँगना म शिक्षा".
ऑनलाईन अध्यापन हेतु,
है मोबाईल में एप दीक्षा.

खेल-खेल में करते मनोरंजन,
बेफ़िक्र करते शिक्षा अर्जन.
जहन में नहीं है कोई भय,
पढ़ाई करते होकर निर्भय.

माताओं संग खेल-खेल में,
शिक्षा लें घर आँगन में.
दें माता शिक्षा हँसी-ठिठोली,
पाएँ शिक्षा अपनी भाषा बोली.

प्रथम गुरु माता ही होती,
बच्चे माँ संग हँसती-रोती.
बेसिक शिक्षा माता से पाती,
तभी माँ स्मार्ट माता कहलाती.

खूब मजे से बच्चे भी करते,
साथी संग समूह सहभागिता.
बच्चे पाते बड़े मजे से अपने,
अपने घर "अँगना म शिक्षा".

कोरोना से पढ़ाई की क्षति,
बच्चों की शिक्षा में हुई दुर्गति.
इस खाई की भरपाई करने,
लगने लगी "अँगना म शिक्षा".

*****

सूरज दादा

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु"

सूरज दादा सुनो पुकार,
हम करते हैं तुम्हें गुहार.

गर्मी से हैं हम सब बेहाल,
हो गया है हमारा बुरा हाल.

इतनी आग न बरसाओ,
हम पर जरा तरस खाओ.

भीषण रूप न हमें दिखाओ,
बदली में जाकर तुम छिप जाओ.

जरा सा चैन हमें दे जाओ,
शीतलता को बरसा जाओ.

झुलस रहे हैं जंगल-कानन,
बनके आओ तुम तारन.

सूख रहे सब नदी-तड़ाग,
बरसाओ न यह तुम आग.

*****

मास्टर जी का सबक

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु"

मास्टरजी कक्षा में उपस्थिति ले रहे थे, भोलू का नाम आया, मास्टरजी ने पुकारा

भोलू!

कोई उत्तर नहीं आया.

पुनःजोर से पुकारा.

पर कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई.

पीछे से एक लड़के ने कहा-

मास्टर जी! वह कुछ दिनों से शाला नहीं आ रहा.

मास्टर जी ने पूछा

क्या उसका स्वास्थ्य ठीक है?

जी मास्टर जी.

"तो फिर वह क्यों नही आ रहा? लड़के ने बताया वह छःमाही परीक्षा में फेल हो गया था.और कहता है कि अब मैं नही पढूँगा."""

मास्टर जी कुछ सोच में पड़ गए.

दूसरे दिन मास्टरजी भोलू के घर पहुँचे.

वहाँ उन्होंने देखा कि भोलू के पिताजी भोलू को समझा रहे थे-

" बेटा, स्कूल जा! पढाई करेगा तो बड़ा आदमी बनेगा. पर भोलू टस से मस नही हो रहा था. भोलू के मन मे हीन भावना आ गई थी, कि वह पढाई नहीं कर सकता.और न ही कभी उसके अच्छे अंक आ सकते हैं. मास्टर जी बोले -भोलू!!"

आवाज सुनते ही भोलू भागकर छिप गया.

भोलू के पिताजी ने

आइए मास्टर जी. कहते हुए मास्टर जी को बिठाया.

मास्टरजी ने पूछा

भोलू की तबियत तो ठीक है न? वह शाला क्यो नहीं आ रहा?

उसके पिता जी ने कहा-

क्या बताऊँ मास्टरजी मैं समझाकर थक गया. अच्छा हुआ आप आ गए आप ही उसे समझाइए!

मास्टर जी ने प्यार से आवाज लगाई - "बेटा भोलू!!

भोलू डरा सहमा सा आया.

मास्टर जी ने को समझाते हुए कहा -

बेटा भोलू जहाँ चाह होती है वहाँ राह भी होती हैं." तुम इतने हताश और निराश क्यों हो? तुम हीनभावना और चिंता छोड़ दो. पूरी लगन से पढाई में लग जाओ. असफलता व्यक्ति को सबक सिखाती है.और कोशिश करने पर सफलता जरूर मिलती है. देखो भोलू जब कक्षा का कमज़ोर बालक होशियार हो सकता है तो फिर.तुम सफल क्यो नही हो सकते?

भोलू को बात समझ आ गई. और वह अपना बस्ता लेकर शाला की ओर चल पड़ा.

अब भोलू मन लगाकर पढाई करने लगा. वार्षिक परीक्षा हो गई.

भोलू को अच्छे अंक मिले थे, सभी से बधाइयाँ मिल रही थीं.

भोलू मास्टरजी का सबक याद करते हुए धन्यवाद देने उनके कक्ष में पहुँचा.

मास्टर जी को प्रणाम किया.

मास्टरजी ने भोलू को उठाकर गले लगा लिया.

*****

देखो ग्रीष्म ऋतु आई है

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु"

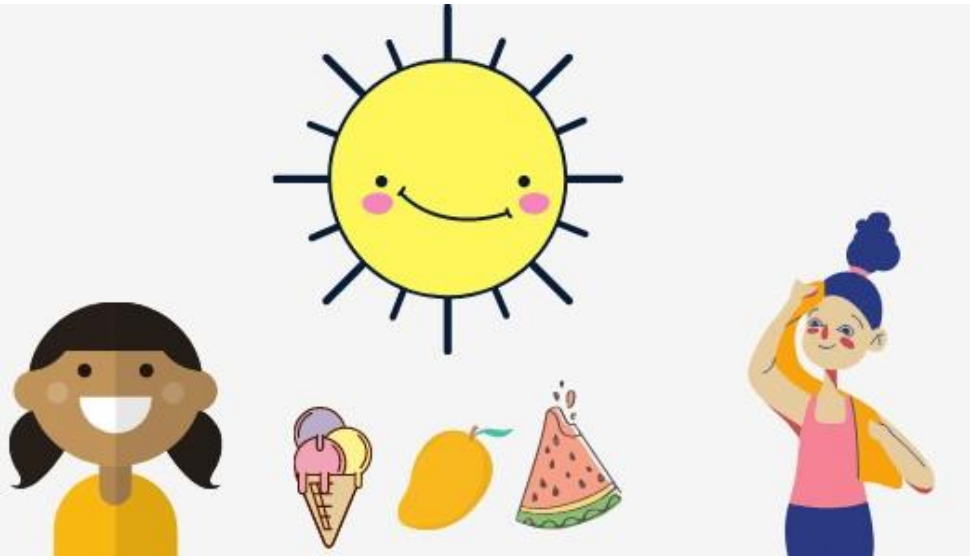

देखो ग्रीष्म ऋतु आई है,
भीषण गर्मी ले आई है.

गर्मी से सब हलाकान है,
गर्मी से सभी परेशान है.

जब-जब गर्मी बढ़ती है,
प्यास हमें खूब लगती है.

गले हमारी सूख जाती है
तब ठंडी कुल्फी भाती है.

कुल्फी-लस्सी ललचाती है,
बच्चों के मन को भाती है.

जब कुल्फी दिख जाती है
तब-तब आखें ललचाती है.

बर्फ के गोले इन्हें लुभाती है,
गन्ने जूस इनको भा जाती है.

कुल्फी-जूस को पाकर मन में,
बच्चों में खुशियाँ छा जाती है.

*****

सूरज-दादा ,सूरज-दादा

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु"

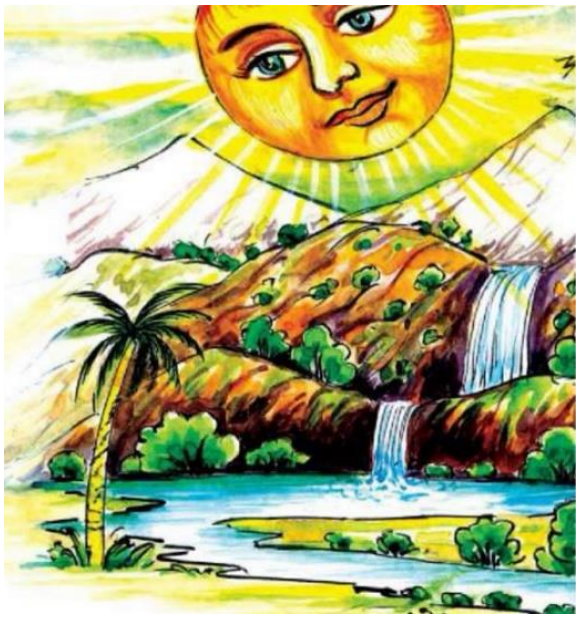

सूरज-दादा, सूरज-दादा,
तुम इतनी गर्मी फैलाओ न.
जीव-जंतु सभी व्यथित हैं,
तुम इतनी गर्मी बरसाओ न.

हरे-भरे सब हरियर पौधे,
तपन-ताप से हलाकान हैं.
पौधों से है धरती की शोभा,
नहीं छीनो इनकी मुस्कान है.

गरम-गरम हवाएँ चलती,
तन-मन को खूब जलाती है.
जीव-जंतु और पँछी सारे,
इन सबके गले सूख जाते हैं.

जंगल-कानन सुलग रहे हैं,
तुम इतनी अगन बरसाओ न.
पेड़-पौधे भी तड़प रहे हैं,
इन पर तुम तरस खाओ न.

तपन-ताप को शीतल कर दो,
कुछ बदली कर जाओ न.
सूरज-दादा,सूरज-दादा
बस इतना भला कर जाओ न.

*****

रानी परी

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु"

आज बिरजू बहुत निराश मन लेकर बाजार से लौटा.जितनी मूर्तियाँ वह बेचने के लिए साथ ले गया था,वैसा का वैसा वापस ले आया.उसकी एक भी मूर्ति नही बिकी.इस कारण वह बहुत दुखी है.

उसके बूढ़े पिता जी बिरजू को देखकर दबी जुबान में खाँसते हुए कहते है-

क्या हुआ बिरजू?

आज तू इतना उदास क्यों है?

तब बिरजू हताशा भरी आवाज में श्वांस छोड़ते हुए कहता है-

क्या बताऊँ पिताजी!!आज फिर मेरी बनायी मूर्तियाँ नही बिकी!"

तभी उसके पिता जी उसे धैर्य बंधाते हुए कहते है-

बेटा इसमें हताश होने की कोई बात नही है.तुम मूर्तियाँ बहुत अच्छी बनाते हो,जब ग्राहक पसन्द नही कर रहे हैं,तो निश्चित ही उसमे और सुधार करने की आवश्यक्ता है.

अपने बीते दिनों को याद करते हुए अपनी लगन-मेहनत और कलाकारी को वह बुजुर्ग पिता अपने बेटे बिरजू को बताता है.आज वह बूढ़ा हो चला है.उसकी सारी इंद्रियां जवाब दे गई हैं और इस कलाकारी को वह अपने बेटे बिरजू को सीखा दिया है.

अपने पिता की सीख भरी बातों को सुनकर बिरजू कुछ सोच में पड़ जाता है.और उसी समय वह उन मूर्तियों की पोटली को खोलकर सर से लेकर पाँव तक एकटक देखने लगता है.

उसने रानी परी से लेकर बहुत सारी छोटी-छोटी परियाँ बनायी थी.सभी एक से बढ़कर एक दिख रही थीं.उनको देखकर ऐसा जान पड़ता था मानो स्वर्ग की परियाँ धरती पर उतर आईं हों.पर बाजार में वही मूर्तियाँ बिक नही रही थी.ग्राहक आते उन मुर्तियों को देखते और चले जाते.इस तरह से जाते हुए देख आखिर में बिरजू ने पूछ ही लिया-

क्यो?क्या हुआ बाबू जी?

क्या मूतियाँ पसन्द नही आयी?

आपको कैसी मूर्तियाँ चाहिए?

इतने सारे प्रश्नों को सुनकर वह आया हुआ ग्राहक स्तब्ध रह गया.

तब वह मूर्तियों की ओर देखते हुए कहता है-

मुझे सोलह श्रृंगार वाली मूर्तियाँ चाहिए.जो रानी परी की तरह लगती हो.

इतना कहकर वह चला जाता है.तब वह बिरजू सोलह श्रृंगार की बात को गहराई से सोचने लगता है.और घर जाकर सारे सोलह श्रृंगार को इकट्ठा किया.फिर उसने रानी परी का सोलह श्रृंगार किया.श्रृंगार होने के बाद वह परी दुल्हन की दमक उठी.दूसरे दिन वह बाजार लेकर पहुँच गया.हरेक आने-जाने वाले उस मूर्ति को देखकर वाह!

वाह! करने लगे कुछ समय बाद वही बाबूजी जो सोलह श्रृंगार की बात कह गया था.उसको देखकर-वाह वाह करने लगे. अद्भुत और प्रसन्न हो गया, तुरन्त उस छोटे मूर्तिकार बिरजू से कहा-

"चलो भाई तुम इस मूर्ति को रख लो और मेरे घर छोड़ दो पास ही मेरा घर है.तब वह छोटा मूर्तिकार बिरजू जी बाबूजी कहकर उसके साथ चला गया.उस बाबू जी की नन्ही बिटिया घर के आँगन में खेल रही थी.उसके पिता जी ने कहा- "बिटिया देखो तुम्हारे लिए क्या लाया हूँ?"

इतना कहना ही था कि उस नन्ही बिटिया की नजर उस परी पर पड़ जाती है.उसको देखकर "फुले नही समाती" और एक ही पल में लपक कर उस रानी परी को छीन कर सीने से लगा लेती है.

और खुश होकर बार-बार चिल्ला रही थी-रानी परी आ गई!!रानी परी आ गई!!

छोटा मूर्तिकार बिरजू उस नन्ही बिटिया को और अपने हाथों में पैसा को देखकर मंत्रमुग्ध हो गया.

*****

उठ स्त्री तुझे जागना होगा।

रचनाकार- समीक्षा गायकवाड़

तू शक्ति,तू भक्ति, तू मुक्ति,
तू जननी इस सृष्टि की.
तुझसे ही अस्तित्व जग का,
सत्य यह स्वीकारना होगा.
उठ स्त्री! तुझे जागना होगा.

कभी वात्सल्य की देविका,
कभी प्रियवर की प्रेमिका.
नहीं तू घर की निःशुल्क सेविका,
अमिट यह मूल्य समझाना होगा.
उठ स्त्री! तुझे जागना होगा.

पिता की पराई तनया तू,
पराये घर से आई भार्या तू.

दो सदन सींचती; तेरा गेह कौन?
प्रश्न यह सुलझाना होगा.
उठ स्त्री! तुझे जागना होगा.

गौर वर्ण, कृशोदरी तन,
हो कृष्ण रंग या स्थूल काया.
नहीं हैं तेरे अस्तित्व की छाया,
विदेह अंगीकार स्वीकारना होगा.
उठ स्त्री! तुझे जागना होगा.

हो अम्बर की तुंगता,
या उदधि की गहनता.
माप लेती तू; है अपार क्षमता,
सामर्थ्य यह पहचानना होगा.
उठ स्त्री ! तुझे जागना होगा..

गृहिणी बन रोटी को दे आकार गोल,
तत्वज्ञानी बन व्योम रहस्य दिए खोल.
है बल तुझमें अपार, अबला नहीं है तू,
छद्मभास ये मिटाना होगा.
उठ स्त्री! तुझे जागना होगा..

नहीं निपट चारदिवारी की शोभिता,
है तुझमें उन्मुक्त उड़ने की योग्यता.
पितृ समाज की बेड़िया तोड़,

स्वछंद परचम लहराना होगा.

उठ स्त्री! तुझे जागना होगा.

कभी नवरात्र में देवी रूप पूजी जाती,

कभी शोषण अग्नि में फूँकी जाती.

द्वंद्व इस अकिंचन अर्चनीय के पार जा,

समानता का दर्जा पाना होगा.

उठ स्त्री! तुझे जागना होगा.

*****

चूहे जी

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र

मोटूमल चूहे जी बोले
मेरी लंबी पूँछ है.
मेरे मुँह पर फर्राती-सी
बड़ी नुकीली मूँछ है.

कपड़े - लत्ते चट कर जाता
कागज खूब कुतरता हूँ.
आलू, टमाटर, गेहूं खाऊँ
नहीं किसी से डरता हूँ.

बिल को खोद सुरंग बनाऊँ
चैन से उसमें रहता हूँ.
इच्छा हो तो पालो मुझको
प्रेम से सबसे कहता हूँ.

पूर्वजों से चलता आया
बिल्ली मौसी से है बैर.
दूर कहीं भी जब दिख जाती
मैं तो लौटूँ उल्टे पैर.

*****

अँगना म शिक्षा

रचनाकार- सोनल सिंह "सोनू"

अँगना म दे के शिक्षा
नोनी बाबू ल आघू बढ़ाना हे.
कोरोना काल म होए घाटा के
हम ला भरपाई कराना हे.

अँगना म दे के शिक्षा नोनी बाबू ल आघू बढ़ाना हे.

महतारी संग लइका के
रिस्ता ल गढ़ाना हे.
सासन के योजना ल
मिलजुल सफल बनाना हे.

अँगना म दे के शिक्षा नोनी बाबू ल आघू बढ़ाना हे.

लइका मन के नींव ल
मजबूत बनाना हे, त

पालक के जिम्मेवारी
सबो पालक ल समझाना हे.

अँगना म दे के शिक्षा नोनी बाबू ल आघू बढ़ाना हे.

लइका अउ माता ल
स्मार्ट बनाना हे.
अँगना म देके शिक्षा
नोनी बाबू ल आघू बढ़ाना हे.

अँगना म दे के शिक्षा नोनी बाबू ल आघू बढ़ाना हे.

*****

ऐसी राह चलो झटपट

रचनाकार- महेंद्र कुमार वर्मा

ऐसी राह चलो झटपट,
जिसमें ना हो झूठ कपट.

भूल-भुलैया राहों में,
बच्चों जाना नहीं भटक.

रंग-बिरंगी ये दुनिया,
इसमें जाना नहीं अटक.

जब खुशियों का मौसम हो,
मस्ती में तू खूब मटक.

चाट -पकोड़े खाना जी,
जो हों खट्टे और चटक.

*****

आकाश

रचनाकार- महेंद्र कुमार वर्मा

कितना नीला है आकाश,
मस्त सजीला है आकाश.

लगे बड़े सवेरे शीतल,
दुपहर चमकीला आकाश.

रात तारों से सज जाता,
लगता सपनीला आकाश.

मेघ जी जब भी आते हैं,
छुपे पनीला ये आकाश.

पक्षी जब करते खिलवाड़,
खुश होता पगला आकाश.

क्षितिज में मिलके धरती से,
गले मिला था ये आकाश.

जब पतंगें उड़ती नभ पे,
होता रंगीला आकाश.

*****

सूरज दादा-सूरज दादा

रचनाकार- जीवन चन्द्राकर"लाल"

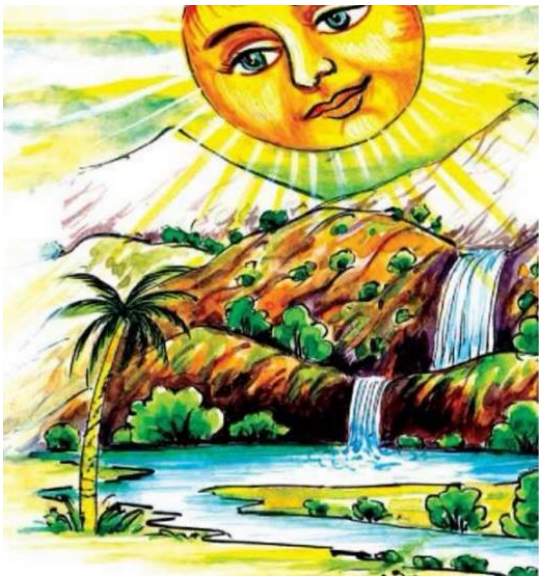

सूरज दादा, सूरज दादा,
गर्मी मत कर इतना ज्यादा.

सूख गए सब पोखर व नदियां,
झुलस गए खेत-खार व बगिया.

व्याकुल हैं, कीट परिंदा.
दूभर हो गया रहना जिंदा.

घर में भी मुश्किल है जीना.
शरीर से अविरल बहे पसीना.

गरम चीज बिल्कुल न भाए.
ठंडे खाने को मन ललचाए.

पथ तो जैसे गर्म तवा है,
आग उगलती गर्म हवा है.

गर्मी को कर लो ना आधा.
सूरज दादा, सूरज दादा.

*****

रविवार छुट्टी की शुरवात

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु"

छुट्टी की बात होते ही हमारे मन में एक खुशनुमा अहसास जाग जाता है. हम सभी छुट्टी का इंतजार करने लगते हैं. छुट्टी तो पढ़ने वाले बच्चे, कामगार, नौकरी पेशा वाले सभी को चाहिए होती है. सप्ताह में एक दिन की छुट्टी तो जरूरी है. क्योंकि आराम भी जरूरी है. पर सवाल यह है कि आखिर छुट्टी रविवार को ही क्यों होती है?

इसका इतिहास बड़ा दिलचस्प है इसकी शुरुआत आज से 175 साल पहले हुई और सप्ताह में छुट्टी का एक दिन रविवार को नियत किया गया. इस छुट्टी को लेकर अलग-अलग कहानियाँ भी प्रचलित है.

अंतर्राष्ट्रीय मानकीकरण संस्था ISO के अनुसार रविवार को सप्ताह का आखिरी दिन माना गया और इस दिन को छुट्टी के लिए निर्धारित किया गया. इसके पीछे जो कारण है वह है ब्रिटिश. 1843 में अंग्रेज गवर्नर जनरल ने सबसे पहले स्कूली बच्चों के लिए रविवार के दिन छुट्टी देने का प्रस्ताव पारित किया ताकि बच्चे घर मे रहकर कुछ अन्य गतिविधियाँ भी कर सकें.

दूसरी कहानी है कि भारत में अंग्रेजों के शासन काल में मजदूर पूरे सात दिन काम किया करते थे, यहाँ तक कि उन्हें लंच का भी वक्त नहीं दिया जाता था. सन 1857 ई.में मजदूरों के नेता मेघाजी लोखंडे ने मजदूरों के लिए आवाज उठाई. उन्होंने यह तर्क दिया कि मज़दूरों को काम के साथ उ अपने लिए भी समय मिलना चाहिए. यह माना जाता है कि 10 जून 1890 में मेघाजी लोखंडे का प्रयास सफल हुआ. इस तरह अंग्रेजी शासन ने रविवार को सभी के लिए छुट्टी घोषित कर दी.

*****

जयति मां दुर्गा भवानी

रचनाकार- अशोक कुमार यादव

जयति मां दुर्गा भवानी, अष्ट बाहु सहस्त्र रूप धारिणी.
रोग,शोक, पाप नाशिनी, असुर महिषासुर संहारणी.
काल,अतिकाल रूपणी, शाकिनी-डाकिनी गर्व मर्दिनी.
सार्वभौम जगत जननी, सुरूप निर्मल काया प्रदायिनी.

विघ्नहरणी,पापनाशनी, चक्र,खप्पर,पिनाकधारिणी मां.
मतवाला मतंग चण्ड-मुण्ड, शीर्षहार ग्रीवा धारणी मां.
नौ स्वरूपा, हरण व्यथा, सर्व सुख दात्रि दयानिधानी मां.
मनुज मन कांति, शांति, मुख प्रखर प्रचंड ज्वालनी मां.

नित्य आरत,पाप स्वारथ, सकल संशय युगचालनी मां.
महासमर सिंहिनी स्वरूपा, दनुज विपिन विदारणी मां.
मेघवन अंधियारे,सर्व उजियारे,जया,आद्या,भवमोचनी मां.
दिव्य भाल,ललाट,भीषण, जाह्नवी सा पतीत पावनी मां.

विश्व रक्षिका,क्लेश नाशनी, युगमौना अमिय संचारणी मां.
विपत विफलनी, निरामयनी, सगर पुत्र काल तारिणी मां.
खोल त्रिनेत्र दो दीर्घ आशीष, बिगड़े बनाए कल्याणी मां.
जन आकुलता हरण करो, भारत रत्नगर्भा संरक्षणी मां.

*****

आइसक्रीम वाला

रचनाकार- आशा उमेश पान्डेय

भोंपू की आवाज सुनकर.
चिन्नी-मिन्नी आती दौड़कर.
आइसक्रीम वाला आया है.
रंग-बिरंगे फ्लेवर लाया है.

बटर स्कॉच या फिर बनीला.
केसर फिर बादाम नवेला.
जो चाहो वह स्वाद मिलेगा.
ठंडक सबको यह देगा.

गली गली में घूमता भैया.
राहत सबको देता भैया.
भोंपू की आवाज सुनकर.
लग जाती है भीड़ जमकर.

पहले मुझे, पहले मुझे दो.
करने लगते है बच्चे सारे.
आइसक्रीम भैया परेशान.
बच्चे करते जब हैरान.

आइसक्रीम को जब पैसे नहीं.
तब याद आती सेविंग कहीं.
गुल्लक फोड़ो पैसे निकालो.
खुशियाँ सारी फिर पा लो.

*****

गौरैया

रचनाकार- हरनारायण चन्द्रा

घर-आँगन में फुदक-फुदक कर,
सब के मन को भाती हो.
बड़े सबेरे चीं-चीं कर के,
हम सब को जगाती हो.

कभी हाथ न आती हो तुम,
उड़-उड़ कर इतराती हो.
कूद-कूद कर दाना चुगती,
सबका मन हर्षाती हो.

आईने के सामने आकर,
चोंच से फटकार लगाती हो.
तिनका-तिनका जोड़कर तुम,
अपना घोंसला बनाती हो.

अपने मानव मित्र को तुम,
कर्तव्य का पाठ पढ़ाती हो.
वर्षा के जल में तुम,
उछल-उछल कर नहाती हो.

जब भी तुम्हारे पास आऊँ मैं,
फुर्र से तुम उड़ जाती हो.
गाँव-घर और द्वार-द्वार पर,
रहता तेरा बसेरा था.

रेडिएशन और तापमान ही,
तेरे जीवन का अंधेरा था.
पेड़ कटे और बनी इमारतें,
अब रहने का ठिकाना नहीं.

चकाचौंध की होड़ में,
अब विलुप्ति की कगार पर है.
गौरैया का महत्व पहचानें,
एक पहल हो गौरैया बचाने.

*****

सिख

रचनाकार- तुषार शर्मा "नादान"

रोग राइ ले बाँचबे, जब तॅंय करबे काम।
रोज मुँधरहा जागके, करबे प्राणायाम।।

जन के मन ला जान लो, कमती करव गुमान।
सब झन ला सम्मान दव, तब तुम पाहू मान।।

मन के मैला धो लुहू, धुल जाही सब पाप।
आदर करही जग घलो, वंदन पाहू आप।।

जतका पढ़ लिख लेव जी, बिरथा हे सब ज्ञान।
जब तक मन मा हे भरे, द्वेष कपट अभिमान।।

शब्द शब्द के फेर हे, जइसन समझे जौन।
ज्ञानी उही कहाय हे, रहिथे जेहा मौन।।

रहिबो मिलजुल के तभे, होही ज्ञान प्रसार।
बड़ हा बड़का कस रहे, छोट करय सत्कार।।

*****

आगे बढ़ता जा शिखर चढ़ता जा

रचनाकार- हरनारायण चन्द्रा

जीवन कर्मपथ है प्यारे,
नये पुराने कुछ है न्यारे.
किसी ने बाजी मारी है,
किसी ने बाजी हारी है.

अब अगले रण तैयारी है,
फ़ूल और काँटे क्यारी है.
है राह कठिन पर चलते जाना,
शिला की ठोंकर से न घबराना.

निर्धारित हो हमारा क्या लक्ष्य,
मिलेगी हमें इतिहास है साक्ष्य.
सफलता असफलता तो कर्म है,
चलता जा चलता जा यही धर्म है.

उदास नर न हो राह पर कभी,
पुलकित आनंदित हो जन सभी.
कर्तव्य करते चल कर्मनिष्ठ,
अभ्यास ही बल में सर्वश्रेष्ठ.

हथौड़े छिनी की प्रहार,
पत्थर भी है सदाबहार.
हौसलों से आगे बड़ता जा,
नित नई शिखर चढ़ता जा.

*****

मोंगरा के फूल

रचनाकार- वसुंधरा कुर्रे

सुंदर श्वेत रंग पुष्प,
रात चाँदनी में खिले हुए.
महक तुम्हारे घर-आँगन,
और गली चारों ओर.

दूर-दूर तक फैली हुई,
महक मन को है भाती.
मन तरोताजा हो जाता,
कली हृदय की खिल जाती.

सजे लटों पर सुंदर गजरा.
और बने मोतियों जैसे हार,
कलियों से सुंदर चादर बने,
मौसम का प्यार उपहार.

कलियों से बना सुंदर सेहरा,
जिससे सजे सुंदर चेहरा.
बने सुंदर फूलों की चुनरिया,
जो चढ़े मंदिरों के देवों पर.

जो कर दे सबको मनमुग्ध,
इससे बनता सुंदर इत्र.
मोगरे का हार सौंपता,
डाल गले मुस्काओ मित्र.

*****

अपराधी

रचनाकार- अशोक कुमार यादव

मैं पहले कुशाग्र मानव था,
लोगों ने बनाया मुझे पशु.
ईर्ष्या-द्वेष,जाति भेदभाव,
देख मंजर निकले आँसू..

भ्रष्टाचार रूपी दानव हँसा,
देख मेरी गरीबी, विपत्ति.
तुम हो बहुत प्रवीण इंसान,
नहीं है तुम्हारे पास संपत्ति.

तुम कभी जीत ना पाओगे जंग,
जब तक नहीं दोगे न्यौछावर.
मिल बाँटकर खाएँगे पद को,
हमारे पास है असीमित पावर.

क्रोध में आकर मारा भ्रष्ट को,
मेरे हाथों में लग गई हथकड़ी.
कटघरा में खड़ा हूँ कैदी बनकर,
सवाल बरस रहे थे घड़ी-घड़ी.

क्यों मारा तुमने दुराचारिता को,
बिना इसके ना कोई काम बने.
झूठे गवाह खड़े हैं दरवाजे पीछे,
निर्दोष साबित कर दूँ खड़े-खड़े.

*****

पापा जी मेले से आए

रचनाकार- जीवन चन्द्राकर "लाल"

पापा मेरे मेले से आए,
बहुत सी चीजें साथ में लाए.
मेरे लिए खिलौने लाए,
मन को मेरे जो अति भाए.

दीदी को मिठाई है प्यारी,
पापा ले आये खूब सारी.
माँ के लिए लाए झुमका,
लगा रही है पाकर ठुमका.

दादी खातिर साड़ी लाल,
चमक उठे उनके गाल.
दादा को कुरता पाजामा,
जब मिला मन से मुस्काए.

पापा जब मेले से आए,
बहुत सी चीजें साथ में लाए.

*****

प्यारी दादी

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू"

लुटाती प्रेम बच्चों पर, सभी मन मोह लेती है.
हमारे साथ रहती है, सदा आशीष देती है.
नहीं वो भेद को जाने, गले सब को लगाती है.
कभी वो बैठ छाया में, कहानी भी सुनाती है.

खिलाती है हमें भोजन, खुशी से झूम जाती है.
भरे वो पेट बच्चों का, हृदय को शांत पाती है.
जरा सी चोट लग जाये, उठा सीने लगाती है.
रुदन करते कभी हम तो, सदा तौफा दिलाती है.

हमारे प्रेम पाने को, नयन को चूम लेती है.
कहूँ दादी हमारी वो, हमें वो प्यार देती है.
करे वो ज्ञान की बातें, हमें बढ़ना सिखाती है.
बढ़े आगे कभी हम तो, सही राहें दिखाती है.

*****

उड़ जा रे परिन्दा

रचनाकार- सुश्री सुशीला साहू "विद्या"

करती हूँ मैं तुमसे फरियाद,
पिंजरा खोलकर दो आशीर्वाद.
मैं एक नन्ही सी जान परिन्दा,
करो नहीं तुम मुझको शर्मिंदा.

मैं खुले गगन में उड़ जाऊँगी,
आसमान को चुम कर आऊँगी.
दे दो मुझे पिंजरे से आजादी,
मेरी जिंदगी करो न बर्बादी.

बाहर होगी मेरी एक दुनिया,
होंगे बच्चे चार मुनिया पुनिया.
चुन-चुन कर दाना मैं लाऊँगी,
चोंच भर-भरकर खिलाऊँगी.

अपनी मंजिल तलाश करूंगी,
खुली हवा में पंख फैलाऊंगी.

झूला झूलूंगी मैं डाली- डाली,
मधुर तान छेड़े कोयल काली.

भोर की लाली देख उठ जाऊंगी,
चहक-चहक कर गाना गाऊंगी.
आजादी हम परिंदों को भाते,
नील गगन हम जब उड़ जाते.

*****

वर्धमान

रचनाकार- अशोक कुमार यादव

संसारिक माया से विरक्त हुए अतिवीर,
राज वैभव त्याग किया राजपुत्र वीर.

कठिन तपस्या से हासिल किया ज्ञान,
सन्यास धारण कर बन गया महान.

आत्मकल्याण करने निकल गए पथ,
ध्यान मुद्रा में बैठे हुए किया महातप.

समवशरण में विद्या प्रसारित किया,
आत्मिक सुख प्राप्ति की मार्ग बताया.

युग में बढ़ गया था पाप और भेद-भाव,
हिंसा, पशुबलि, जात-पात का प्रभाव.

दुनिया को सत्य,अहिंसा का पाठ पढ़ाया,
अहिंसा को उच्चतम नैतिक गुण बताया.

जैन पंचशील सिद्धांत के प्रवर्तक आचार्य,
अहिंसा,सत्य,अपरिग्रह,अस्तेय,ब्रह्मचर्य.

अनेकांतवाद और स्यादवाद के हैं जनक,
सर्वोदयी तीर्थों में क्षेत्र,काल,जाति मानक.

त्याग, संयम, प्रेम, करुणा, शील, सदाचार,
धार्मिक मानव को देवता करते हैं नमस्कार.

आत्म धर्म,सर्व आत्मा के लिए एक समान,
जियो और जीने दो सभी प्राणी को इंसान.

*****

पहली कमाई

रचनाकार- जीवन चन्द्राकर"लाल"

प्राथमिक शाला द्वारिकापुर में बच्चे प्रार्थना की कतार में खड़े थे. सामने बरामदे में सभी शिक्षक खड़े थे. अपने हाथ में कुछ नोट लिए पाँचवीं के छात्र रमेश ने प्रवेश किया. शिक्षकों व बच्चों का ध्यान उस पर गया.प्रधानपाठक ने उसे बुलाया और पूछा-रमेश तुम इतने पैसे लेकर क्यो आए हो? हमने तो कोई फीस नहीं मँगाई है.

रमेश ने आदर से जवाब दिया-सर, आज मैंने अपने घर के कम्प्यूटर से कुछ प्रिंट आउट निकाले हैं,जिससे मुझे 120 रुपए मिले, ये वही पैसे हैं.

शिक्षक ने कहा- तो इसे अपने मम्मी-पापा को देना चाहिए.

रमेश ने जवाब दिया-मैं दे रहा था,पर पापा ने कहा इससे अपने स्कूल के साथियों को चा ॅकलेट खिलाना. इसलिए लेकर आया हूँ, चा ॅकलेट लाकर सभी साथियों का बाँटूंगा.

ऐसा क्यों? शिक्षक ने फिर पूछा.

सर ये मेरी पहली कमाई है, जिसे अपने साथियों के साथ बाँटना चाहता हूँ" रमेश ने जवाब दिया.

रमेश के जवाब ने सभी बच्चों को प्रभावित किया.

प्रार्थना हुई और उसके बाद मंच पर रमेश को बुलाया गया. प्रधानपाठक ने सभी बच्चों को बताया कि रमेश अपने पिताजी को कम्प्यूटर पर काम करते रोज देखता है और काम करना सीख गया है. आज खुद काम करके 120 रुपये कमाए हैं. वह अपनी पहली कमाई हम सब के साथ बाँटना चाहता है.

सभी बच्चों ने खुश होकर रमेश के लिए तालियाँ बजाईं. रमेश का सीना गर्व से चौड़ा हो गया था.

*****

फास्ट फूड ना- ना- ना

रचनाकार- डॉ. सतीश चन्द्र भगत

गर्मी की चिलचिलाती धूप में अन्य बच्चों के साथ स्कूल की छुट्टी होने पर अर्णव भी पैदल ही चल दिया था. अर्णव धीरे- धीरे चल रहा था. अन्य बच्चे तेज- तेज चल रहे थे. बस्ते का अधिक भार था.वहीं उसका अपना भार भी कम नहीं था.

अर्णव का घर तीसरे मंजिल पर था. वह धीरे- धीरे सीढ़ियाँ चढ़कर कमरे में आ गया था.

" आ गया बेटा" अर्णव की माँ उसे देखते ही बोली थी- "हाथ- मुंह अच्छा से धो लो बेटा.मैं खाना परसकर ला रही हूँ."

" इतनी जल्दी भी क्या है माँ! थोड़ी सांस तो ले लूं .फिर खाना खाऊँगा."

ठीक है! कुछ देर रूककर ही खाना लगाती हूँ.

कुछ समय के बाद अर्णव मुंह- हाथ धोकर डाइनिंग टेबल पर जाकर बैठ गया. उसकी माँ ने उसके आगे खाना परोसा. खाने में हरी सब्जी, दाल और खीरा- ककड़ी, अंगूर, टमाटर, प्याज का सलाद.

अर्णव ने नाक- भौं सिकोड़ते हुए खाना खाया. सलाद को छूआ भी नहीं.

अर्णव की माँ ने कहा था-" बेटा सलाद स्वास्थ्य के लिए फायदेमंद है. सलाद खाना चाहिए."

अर्णव कुछ नहीं बोला.

गली में फास्ट फूड वाला ठेला आते हुए दिखाई दिया.

अर्णव ने अपनी माँ से कहा-" माँ! माँ! माँ! फास्ट फूड्स का ठेला आ रहा है.उसे रोकता हूँ. नूडल्स या चाट चटनी के साथ खरीद दीजिए.

उसकी माँ उसे नूडल्स खरीद कर दे देती है.फिर चाट और चटनी भी.

जब वह फास्ट फूड खा लेता है. तो अर्णव के पिता जी भी आ जाते हैं. उन्होंने कहा- " फास्ट फूड हमेशा खाने की चीज नहीं है.उससे अनेक प्रकार की बीमारी हो जाती है ."

लेकिन, अर्णव अपने पिता की नसीहत को सुनकर भूल जाता था. फास्ट फूड्स खाना उसकी आदत हो गई थी.

उसे भूख भी कम लगने लगी थी.फास्ट फूड्स के अलावे अर्णव को घर का रोटी- दाल, भात और सब्जियां भी अच्छा नहीं लगता था.

एक दिन अर्णव फास्ट फूड के साथ ठंडा कोक की बोतल लेकर मजे से पी लिया.

और स्कूल चला गया.शिक्षक ने पढ़ाया कि फास्ट फूड्स अधिक सेवन करने से रोगी बनकर अस्पताल में भर्ती होना पड़ता है.

लेकिन, अर्णव एक दिन किसी काम से बाजार गया था. फास्ट फूड्स बेचने वाले के पास जाकर उसने खूब डटकर चटनी के साथ फास्ट फूड्स खा लिया और घर वापस आ गया.

रात में उसके पेट में दर्द होने लगा. वह छटपटाने लगा. अर्णव के माँ- पिता जी उसके बिछावन तक गए .उसे उल्टी होने लगी थी. फिर दस्त भी होने लगा था.

अर्णव को लेकर उसके माँ- पिता जी अस्पताल ले गए.

उसकी नाजुक स्थिति देखकर डाक्टर ने भर्ती कर लिया था.

इंजेक्शन लगाकर डाक्टर ने ग्लूकोज चढ़ाया.

अर्णव जब थोड़ा सामान्य हुआ तो डाक्टर ने पूछा-" क्या खाया था ? "

अर्णव ने धीरे से कहा-" चटनी के साथ फास्ट फूड."

अरे! तभी तो ऐसी स्थिति हो गई.पता नहीं आजकल के बच्चे फास्ट फूड्स से इतना प्रेम क्यों करते हैं.वैसे ही यह स्वास्थ्य के लिए शत्रु है. संक्रामक रोगों का भंडार है फास्ट फूड्स.

अर्णव क्या कहता .उसने कहा-" जी हाँ! अब फास्ट फूड नहीं खाऊँगा."

घर में बना हुआ भोजन प्रेम से खाऊँगा.

दो दिन के बाद अर्णव स्वस्थ हो गया था.

अस्पताल से छुट्टी मिल गई थी.

डाक्टर ने कहा था-" माँ- पिता जी की बात मानकर घर में बना हुआ खाना ही खाना.सलाद, हरी सब्जियों के साथ दाल - भात और रोटी भी.समझ में बात आई. ताकि तुम्हारे शरीर को जरूरी विटामिन और खनिज पदार्थ मिल सके.

अर्णव को कुल पांच दिन लग गया था, स्वस्थ होने में.

अपने माँ- पिता जी उसने कहा-" अब मैं फास्ट फूड नहीं खाकर सलाद, हरी सब्जियां, दाल- भात और रोटी खाकर स्वस्थ रहूँगा.

और अगले दिन से स्कूल भी जाने लगा था. टिफिन बाक्स में फल की मांग करने लगा था अर्णव ने.

और अर्णव ने कहा-" फास्ट फूड ना-ना-ना."

*****

भारत भ्रमण कराना पापा

रचनाकार- बलदाऊ राम साहू

हुई परीक्षा अब हम सबकी
वादा किया, निभाना पापा.

कश्मीर से कन्याकुमारी
भारत भ्रमण कराना पापा.

प्रेम घनिभूत बनी इमारत
ताजमहल दिखलाना पापा.

ले जाना उँटी और शिमला
कश्मीर भी ले जाना पापा.

भारत का है वैभव विशाल
दिल्ली शहर घुमाना पापा.

इंडिया गेट, लोटस टैंपल
कुतुबमीनार दिखाना पापा.

जनपथ की शोभा है न्यारी
मेट्रो से सफर कराना पापा.

और देखेंगे जलधि विशाल
रामेश्वर ले जाना पापा.

उत्कल की है शोभा अनुपम
पुरी दर्शन कराना पापा.

*****

चित्र देख कर कहानी लिखो

पिछले अंक में हमने आपको यह चित्र देख कर कहानी लिखने दी थी –

हमें जो कहानियाँ प्राप्त हुई हम नीचे प्रदर्शित कर रहे हैं

संतोष कुमार कौशिक द्वारा भेजी गई कहानी

लिटिल पेंटर

छुट्टी का समय था. श्याम और गीता बगीचे में थे. हर तरफ पेंट के टीन रखे थे. जिसमें लाल रंग,सफेद रंग,हरा रंग, नीला रंग, पीला रंग आदि वहाँ विभिन्न रंग रखे थे. जहाँ एक चित्रकार सीढ़ी पर था और दूसरा चित्रकार छत से झूले पर लटक रहा था. उसे देखकर श्याम और गीता उससे पूछा-क्या हम आपकी मदद कर सकते हैं? चित्रकार ने उन्हें एक-एक ब्रश दिया. उन्होंने श्याम से कहा- "आप गेट के अंदर पेंट करो" और गीता से कहा- "आप गेट के बाहर पेंट करो."

उन्होंने पेंट के दो टिन उठाए और काम पर लग गए. श्याम ने गेट के एक तरफ पेंट किया और गीता ने गेट के दूसरी तरफ पेंट किया. पेंट जमीन और दीवार पर बिखर गया. अंत में पेंट समाप्त हो गए. उन्होंने एक कपड़ा उठाकर, उस पेंट को मिटा दिया जो जमीन और दीवार पर गिर गया था. अंत में उन्होंने अपने द्वारा पेंट किए हुए गेट को देखा.दोनों उसे देखकर बहुत खुश हुए. श्याम ने कहा- "मैं अपने लाल दरवाजा से बहुत प्यार करता हूँ. गीता ने कहा मैं अपने हरा दरवाजा से बहुत प्यार करता हूँ.

चित्रकार ने उन दोनों के पेंट किए हुए गेट को देखकर आश्चर्य में पड़ गए. उन्होंने पुनः दोबारा पेंट करना चाहा तभी उसकी माँ कहती है आप दोनों ने दो रंग का सुंदर गेट बना दिया है. आप दोनों बहुत ही सुंदर ढंग से पेंट किया है चलो इसे हम ऐसे ही रखेंगे. माँ की बातों को सुनकर श्याम और गीता अपने किए हुए कार्य पर बहुत ही प्रसन्न होते हैं. कुछ दिन पश्चात वे दोनों एक अच्छे चित्रकार बनते हैं.

हरनारायण चन्द्रा द्वारा भेजी गई कहानी

शौचालय

एक गाँव में रामू नाम का व्यक्ति रहता था, वह अत्यंत निर्धन था तथा रोज मजदूरी करके अपना जीवन यापन करता था. रामु के दो बच्चे थे एक का नाम मुन्नी तथा दूसरे बच्चे का नाम रोहन था. दोनो बच्चे गाँव के ही प्राथमिक शाला में पढ़ाई करते थे. रामू ख़ूब मेहनत करता था जिससे बच्चों की अच्छी परवरिश हो सके. रोज़ शाम को काम से जब घर आता था अपने बच्चों के लिये खई खज़ाना अवश्य लाता था. रामू की पत्नि कई वर्ष पहले रात के अंधेरे में शौच के लिये बाहर गई थी साँप के काटने के कारण उनकी मृत्यु हो गई थी.तब से रामू अपने बच्चों के लिये माता व पिता दोनों थे.

रामू का गाँव छोटा था और वहाँ निवास करने वाले लोग खुले में शौच करने जाते थे. महिला पुरूष तथा बच्चे सभी खुले में शौच करते थे. सुबह जल्दी अंधेरे में उठकर रामू भी शौच के लिए जाया करता था. अपने साथ वह बाल्टी में पानी तथा अंधेरे से बचने के लिए टॉर्च ले जाया करता था. जब वह शौच से वापस आता था तब उनके बच्चे भी बाल्टी में पानी तथा अंधेरे में टार्च पकड़कर बाहर शौच के लिये जाते थे. दिन में किसी की तबियत ख़राब हो जाती थी तो शौच के लिए बाहर जाने में बड़ी कठिनाई होती थी.

रामू के दोनों बच्चे रोज स्कूल जाया करते थे. एक दिन स्कूल में बाहर से एक टीम आई थी और वे बच्चों को स्वच्छता अभियान के बारे में बता रहे थे. उनके द्वारा बताया जा रहा था की हमें बाहर में शौच नहीं करनी चाहिए. बाहर शौच करने से गंदगी फैलती है और उस पर मक्खियाँ बैठती है और वही मक्खियाँ बाद में हमारे घरों में घुसकर खाद्य पदार्थो पर बैठकर गंदगी फैलाती है जिससे हम बीमार पड़ जाते हैं. रात्रि के अंधेरे में हम शौच के लिये बाहर जाते हैं तब जहरीले सांप बिच्छू आदि जीव जंतुओं का काटने का डर रहता है. दिन में कभी पेट खराब हो जाती है तो हम लज्जावश शौच नहीं जाते और हम बीमार पड़ जाते है.अतः हमें घर में शौचालय बनवाकर उपयोग करना चाहिए.

मुन्नी और रोहन स्कूल से घर आने के बाद अपने पिताजी रामू को स्कूल में आयी हुई टीम जो स्वच्छता अभियान के बारे में बता रहे थे उन सारी बातों को बताते हैं. बच्चों की सयानी बातों को सुनकर रामू अपने घर मे शौचालय बनवाने का निर्णय लेता है और कुछ दिनों में शौचालय बनकर तैयार हो जाता है.अब रामू तथा उनके बच्चों को शौच के लिये बाहर जाना नहीं पड़ता है. रामू के घर में शौचालय निर्माण की बात पूरे गाँव मे फैल जाती है और उनसे प्रेरित होकर गाँव के सभी लोग अपने अपने घरों में शौचालय बनवा लेते हैं.अब उस गाँव मे कोई भी व्यक्ति खुले में शौच करने नहीं जाता.

"कोलिहा करे हुवा हुवा, बघवा करे हाव,

मुन्नी कहे रामू ल, पिता जी बाहर शौच करे झन जाव"

<u>आस्था तंबोली कक्षा तीसरी द्वारा भेजी गई कहानी</u>

रामू एक बहुत अच्छा पेंटर था. वह सब के घर जाकर पुताई काम करता और अपनी रोजी रोटी कमाता था. पेंट करने पर जो पैसे मिलते थे उसी से ही उसका घर चलता था उसके घर में उसकी पत्नी के साथ - साथ दो बच्चे थे वह भी काफी समझदार थे. वे हमेशा अपने पिताजी के साथ काम करते थे और अपने पिताजी की मदद करने के लिए सदैव तैयार रहते थे.

एक दिन बच्चों के स्कूल की पुताई का काम चल रहा था बच्चों ने देखा कि उनके स्कूल में सभी तरफ दीवारों को पेंट किया जा रहा है तो वह भी पुताई में मदद करने लगे जब पूछा गया कि तुम कैसे यह सब कर लेते हो तब उन्होंने कहा हम अपने पिताजी के साथ उनकी मदद करने के लिए थोड़ा-थोड़ा काम करते रहते हैं इसीलिए हमें पुताई का काम करना आ जाता है सभी बहुत खुश हुए उसके पिताजी भी उस स्कूल में पुताई का काम कर रहे थे यह बात सुनकर वह भी बहुत खुश हुआ और अपने दोनों बच्चों को शाबाशी देते हुए कहा कि हमें कभी भी किसी काम को छोटा या बड़ा नहीं समझना चाहिए. हमें सभी काम में सब की मदद करनी चाहिए ऐसा कहते हुए वह पेंटर अपने दोनों बच्चों को गले से लगा लिया बच्चे भी बहुत खुश हुए. आप सब को बच्चों को इसी प्रकार प्रेरित करते हुए अच्छी सीख देनी चाहिए.

अगले अंक की कहानी हेतु चित्र

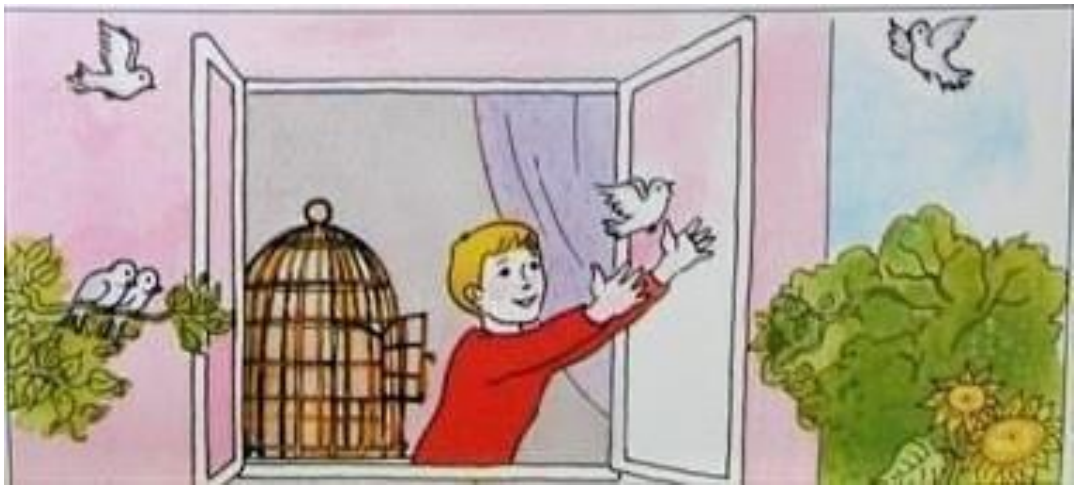

अब आप दिए गये चित्र को देखकर कल्पना कीजिए और कहानी लिख कर हमें यूनिकोड फॉण्ट में टंकित कर ई मेल **kilolmagazine@gmail.com** पर अगले माह की 15 तारीख तक भेज दें. आपके द्वारा भेजी गयी कहानियों को हम किलोल के अगले अंक में प्रकाशित करेंगे

भाखा जनऊला

भाखा जनऊला

रचनाकार- दीपक कंवर

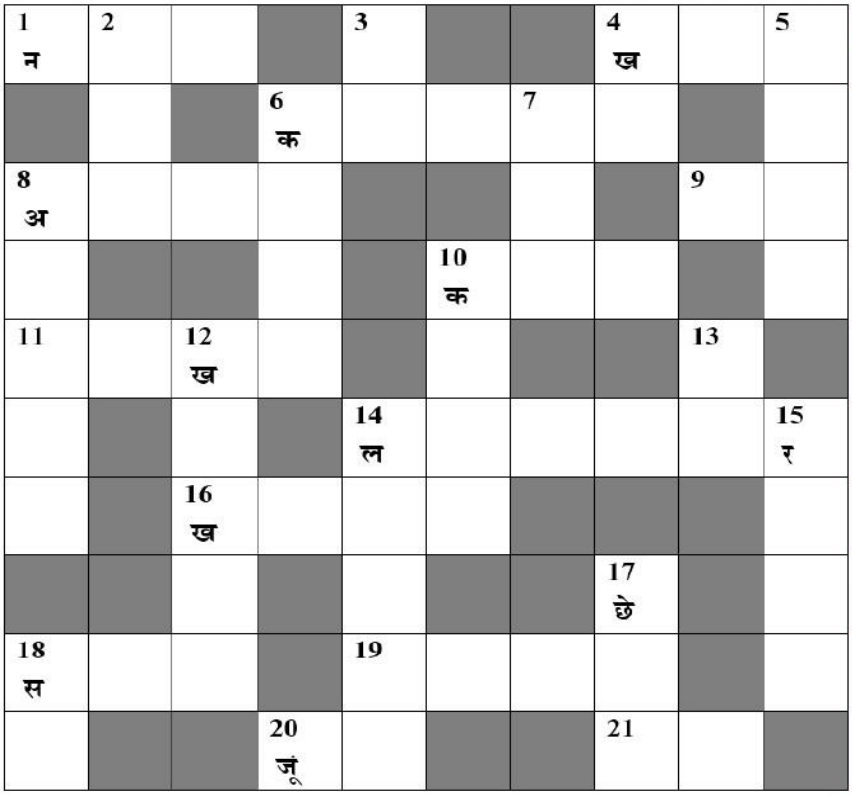

बाएँ से दाएँ

1. गायब, नदारत
4. खपरैल 6. कान का मैल
8. अजीब 9. ढंक
10. चाँवल का बहुत छोटा टुकड़ा 11. अचानक
14. जल्दी-जल्दी
16. ओखली 18. सड़ा
19. वनक्षेत्र
20. जूं 21. खाली

पिछले भाखा जनउला के उत्तर

1 तो	2 त	रा	हा		3 ख		4 बाँ		5 झा
	र				रा		6 को	7 प	र
	8 मु	च	9 मु	चा	य			र	
10 गु	ड़		ड़				11 बि	सा	12 व
13 ख	वा		14 स	वं	15 के	र	हा		इ
रु		16 पै	री		रा		ता		स
	17 चु	री	या	18 ही				19 झ	न
20 घा	ल			21 र	जु	ति	या		
22 म	मा			वा		हा		23 ला	ग
	24 टी	क	रा		25 क	र	ल	ई	

ऊपर से नीचे

2. फिसल 3. लाओ, ला
5. थप्पड़ 7. पीठ के बल
8. आश्चर्यजनक
10. एक बड़ा टिड्डा का नाम 12. खुरदुरा 13. सर के बाल पाये जाने वाला कीट
14. बातुनी 15. रथ- यात्रा
17. नवजात शिशु को जन्म दी हो 18. हम जाति, एक ही जाति वर्ग के

http://www.kilol.co.in

स्कूली शिक्षा में समर्थन हेतु समर्पित संस्था

WINGS2FLY SOCIETY
COME LETS FLY

अपनी किलोल की सदस्यता जारी रखने हेतु सबस्क्रिप्शन लेना न भूलें

किलोल की जानकारी

- बच्चों के पठन कौशल एवं पढ़ने कीरुचि विकसित करने हेतु विगत चार वर्षों से बाल-पत्रिका किलोल का ऑनलाइन प्रकाशन किया जा रहा है।
- किलोल को प्रकाशित करने का उद्देश्य शिक्षकों के रचनात्मक कौशल एवं लेखन को प्रदर्शित करना भी है।
- विगत एक वर्ष से किलोल की मुद्रित प्रति भी प्रकाशित की जा रही है जिसका उपयोग आप स्वयं के लिए, अपने बच्चों के लिए एवं कक्षा के विद्यार्थियों के लिए भी नियमित रूप से कर सकते हैं।

किलोल पाने हेतु

वार्षिक सदस्यता (शुल्क 720रु.)

आजीवन सदस्यता (शुल्क 10000रु.)

आप अपनी सदस्यता सुनिश्चित करने हेतु सदस्यता शुल्क Wings2Fly Society के बैंक ऑफ़ बड़ोदाशाखा विधानसभा रोड़ मोवा, रायपुर **खाता क्र. 45730100004644 आई.ऍफ़.एस.सी कोड BARB0MOWAXX(0 is zero others are 'O' in IFSC CODE)** में जमा करावें।

राशि जमा करवाने के पश्चात **www.kilol.co.in** में पंजीयन कर अपना विवरण भर दें। पिनकोड सहितअपना पता एवं अन्य विवरण ताराचंद जायसवाल जी को 9926118757 पर व्हाट्सएप पर भी भेज दें।